

वेदवाङ्मयं दत्तं ॥ तस्मात्पूषो य ऊर्ध्वीनिर्त्यं --- ननः ॥ ॥ स्नाननः दत्तं प
 रिप्रमत्तं दत्तं देव देवपनि विज्ञातं स्नानमः स्नानया प्रमत्तं वचनरीडख
 मतिता ज्ञायः पनमध्वन इत्तं स्नानमविज्ञातः पनमध्वन प्रसंन इत्तं स्वा
 ननः इत्तं स्नाननः धर्मः अर्थः कामनाः पूष्टिभागाः स्वर्गमाद विल ॥ स्नान
 याः चूतः वृक्षा विशाकः स्नानया मध्वसः विष्टु विशाकः स्नानया चोकास

३ जायाय धालसा. ॐ सिम इ ॐ गुलि स्नानन घालमगह स्नानन. वसम हा ॐ स्नानन
 कीलम इ स्नान. थवर्क वस हा ॐ स्नानन. पूजायाय ॥ कृगु कालस. हा ॐ स्नान
 लेखस जायल पूस्नान. कूलस जायल पूस्नानन. पूजायाय ॥ कूभया वून. विल्वप
 वन. पूजायाय स्नानमदग हा वस्नान माया कूय. हलंमद हा ॐ ॐ षधी कूय
 ॐ ष --- वनस जायल पू. सिमा. गुलि. ॐ षधी मदग हा स. एकिए वन पूजाया
 हल २

३

य ॥ संगुद ॐ स्नान. हा ॐ स्नान. ॐ सि स्नान. ह मि स कू निठ स्नान. शुविम इ ॐ
 स्नान थिया स्नान. थग स्नान. कूय मग ॐ ॥ मूखून. मद्रिठ स सा. उगनन क्रि
 ६. स सा. पूर्व ल सद्रिठ. थग कूय मग ॐ ॥ ॥ स्नानमालायां ॥ कलिकाहि
 रुथ ३ न चो. विनाचं पक पं क ॐ ॥ ॥ मूकूल शलसां. चं प स्नान. पले स्नाने गा कू
 य मग ॐ. थग गावाहिकन. भवगा मूकूल कू स्नाने मग ॐ ॥ ॥ एविष्णु ॥ स्वयं

७ पर्युषिता धिताः॥ ॥ **तोयपले** चाद्रूपले च अल उ फौल धन स्वानया वाङ्मगा आसि
 मइउ मवगा स्वान गंधमहीनाल आसिमइउ नागीया कूप हलताल जील स्वा
 न आसिमइउ ॥ कनवीन स्वान क्रिचि चक्रि आसिमइउ ॥ तुलसि कासिव
 व्यालपव धन श्वल क्री आसिमइउ ॥ ॥ **हानमालायां** ॥ पूष्पं वायदिवा प्रगं रु ७
 लं नैरु मधु मूर्ख ॥ पूष्पां कलि विधि हित्वा यत्थत्यनंग थर्ष ॥ ॥ **स्वा**

नइलसी हलइलसी कासागवाडा कृयमगव गरथ होल अर्थ कृय कासागवा
 डा कृलसा रुलमइ पूष्पां कलियाइका विचालमइ ॥ ॥ **गथाहा** निग ॥ स्नानं कृत्वा तु
 शकं चित् पूष्पं चिन्वन्निमानवाः गदवता र्त्तनग क्निए स्त्री एव निकाष्ठवतू ॥ ॥ **सुनानं** इ
 लसां मध्वा क्नकायनया स्नान धनकाडा स्वान धयिडा आगुलि स्वान दवपनी सन मका
 डा अग्निन सिए स्याथार्थ धर्मना **इल** ॥ ॥ पनात्रा पितृ कृथा पूष्पां

मस्तयं २

ह दायथाव्ययः ॥ भूनूहापिचगस्येव निःरुलंगस्यपूजनं ॥ ॥ मवन पिडावगयास्वान
मास चादस्वाने मरुस्य कयायानिःरुल ॥ ॥ यगु ॥ गृहोद्वसुमस्तयं मनून
ववीगु ॥ ॥ घास कूसि स्वान खपाज कायगजः ध्वमनूयावचन ॥ ॥ अदवन
चितं पूषं दवगार्थे गयेव च ॥ आददानः पनरुगात नदधुं दागुमहेति ॥ ॥
दवयामिमिदिन पिडा मरुगुलिस्वान भवयाकवसे चादस्वान ध्वगदव

यानिमिदिन कायाज हलदास ध्वकयात दंडयाय आग्धमशडा ॥ ॥ दवी
पुनारु ॥ नपः क्षील्लगुरुक्षपेन पातवदस्य पानरग ॥ दक्षदत्वास्वधुनि यत्
लंकूसमभूतगु ॥ ॥ नपक्षील्लगुक्षन संशकइडा पातइडा समस्त वेदंसडा
धथिक्वाक्क्षयात लूगां नाना दानविया रुल धथिगुलि रुल दवयाक
स्वानकायाया ॥ ॥ सिकल्प ॥ अद्यतपक्षील्लगुरुक्षपेन वेदपानगवाक्क्षय

संप्रदानकदमसूचधुदानजन्यरत्नप्राप्तिकामः अमृकदवर्ता अमीतिः पूषः
 ७ : पूजयिष्य ॥ ॥ ॐ निसामान्यपूषसंकल्पः ॥ ॥ रविष्य ॥ मालनीमस्त्रिकाइ
 द्यौः जवाकार्णागिमृककः ॥ जावन्तिकनवीनश्च वकस्मिनकप्रवचा ॥
 गपयाक्षिचान्यानिनका निस्तुनीनिवा ककुर्वीरगगर्भाकः कर्हि कानः
 कुक्षकः ॥ चंपकाधर्ककश्चार्कजयावकूलप्रागलाः ॥ विल्वपत्रं समीपत्रं ॥
 २१

चंदनीस्नान २
 गनाउस्यपत्रकं ॥ गमालपत्रधायाश्च सदेवगपनप्रियं ॥ गुलसीकालगुलसीग
 धार्वेनकचन्दर्न ॥ ककुर्वीपत्रपूषश्च सशमुष्टिकनंनवः ॥ ॥ जीलस्नान गुलगु
 जिहलस्नान कासिव माधवीस्नान चकसिव कनवीर सूकुंदनाज कायलक
 स्नान पलस्नान दकुलिस्नान नगनाय वकसियाव कोलागस्नान चंपस्नान
 धार्क अर्कप्राग लक्ष्मीस्नान चकूलस्नान पागुलि व्यालपत्र अमीपत्र ति

लायहल गमालपत्र अंवहल ध्वतस्वान सूर्योयाप्रिय तुलसी कृष्णगुलसी नक
 चंदन केशकीपत्र ध्वतस्वानन श्रीहृद्यननानं संतुष्टश्री ॥ ॥ विष्णुध्वजा ॥
 स्नानमूद्रासमायुक्तं पुष्पनिःशुपनंचनं ॥ स्नानमूद्रान संशुक्लन देवया
 कः स्नानकाय ॥ ॥ विष्णाः पूष्पाब्धाह ॥ ॥ विष्णु ॥ शानंचरवादिना ध्वक्तं कु
 त्समंचकूलस्यचातगनंकनवीनश्च सितनकंपलासुडं ॥ कृष्णपूष्पंचप

सी २
 केश अरुणांकंकुंकुंकंतथा ॥ विसंध्यायुधिका कून्ध भगपतंचमद्वित्रिका ॥ डा
 गीचगुलं विष्णाः प्रक्षस्तानियथोक्तं ॥ ॥ ध्वतस्वानक्रमन प्रक्षस्त श्रीविष्णु
 याकंककायया वुपागकास्वान खयलसिंहल उगतहल वकूलस्वान ग
 गलाय कनवीनस्वान भायूडा कायूं लाहाव कृष्णवू चंपस्वान अरुणा
 कस्वान रुकूलस्वान निष्कूलस्वान जिथिस्वान बाफोलस्वान भगपत

चंवेलीस्वान उल्लस्वान तुलसी ध्वजः श्रीविष्णुयास्वान कृपांज्ञा हाकथः प्रथमः ॥
 वामनपूजा ॥ पानिएद्रं पादलीच वकूलं गिनिष्ठालिनी ॥ निलकंजं वृवनं जं पीत
 कंतगनं त्वपि ॥ नृगानि हि प्रथमानि कूसुमान् च गतावेभ ॥ ॥ विष्णुया पूजा स ध्वज
 स्वान प्रसक्त वकसि व पादलिस्वान वकूलस्वान गायुडा भूपक्राति कूलस्वा
 न गायुजित शालस्वान यशुडा स्वान गगलायस्वान ध्वज विष्णुया गच्छाय ॥ ॥

ए यानिष्ठमभनजागानि यानिकाननयानिव ॥ ४
 विष्णुधर्मोत्तम ॥ नकारः कस्य कसुमी भृगसी कसुमी तथा ॥ चंपकस्य च दयानि
 तथा हंपं च कस्य च ॥ काउ भूः कस्वान तिसि व चंपस्वान हमी चंपा ध्व
 जः श्रीविष्णुया के कस्य गता ॥ ॥ विष्णुधर्मोत्तम ॥ नकारानि यानि धर्मोत्तम ॥ ॥
 नृपदशा ह्वानि च ॥ का टजी अलमली पूष्पः शिनी प्रश्न जना दन ॥ निवदिन
 रथी गार्ग निः सवश्च प्रयच्छमि ॥ विष्णुया गता अध कस्य या गुलि कादूस्वा

न. येपवृक्षसहाउत्खान. मृत्तानसउत्पदिशउत्खान. गउधकमध्यागुलि. ~~वृक्ष~~
~~वृक्षसहाउत्खान. मृत्तानसउत्पदिशउत्खान. गउधकमध्यागुलि.~~ विवनसजायसपूखान. कूटवीउत्खान.
 सिमलसियाव. अलेचाकलसियाव. धनस्वानन. झानीकनविष्कृपूजायाय
 मभउ. यागसा. रथदयुता. नागीइयिता. इ. खिइयिता. ॥ नानदीयस १०
 फसाहमु. ॥ मालनीवकूला. क. स. रालीवनमालिका. अमूलान. तगन.

का०. मल्लिकामधूपिशुिका. ॥ यूथिकाष्टापदं कूटं कदम्बमधूपिशुलं. ॥ पाठ
 लापंचकंकुन्दं. लवङ्गमतिमूककं. किनकंकुनूवकं. विल्वं. क. कानं. वासकं.
 द्विज. ॥ पंचविंशतिपुष्पाणि. लक्ष्मीतुल्यप्रियाणि. ॥ ॥ जीलस्वान. वकूलस्व
 न. अशोकस्वान. सथस्वान. नवलीस्वान. सचलस्वान. तगनायस्वान. का० चं.
 वलीस्वान. मधूपिंडिका. जिथिस्वान. अष्टापदध्यास्वान. दारुलस्वान.

११ कदंबस्वान मधुपिंगलधायास्वान पाटलीस्वान वंपस्वान घाफोलस्वान रु
 गाजान लतादस्वान केतकीस्वान कातादस्वान बालपत्र कलानस्वान १
 आदसवू ॥ श्रीविष्णुन आद्वादत धर्म नियदाता जातिस्वान लक्ष्मीशतुल्य नि
 कंमतदाधकं आद्वादत ॥ ॥ आनय ॥ पद्मानर्पवू समूथानि न कनील तत्थात्प ११
 ल ॥ सितात्पश्च हृष्य दयितानि सदानुप ॥ ॥ लंखस हाडा पलस्वान को ११

६ चडाल उकालस्वान तायूचडाल धर्म श्रीकृष्णयागकृत्य ॥ ॥ वामनपूना १॥
 विल्वपत्रं सैमीपत्रं तंगिनाउस्यपत्रकं ॥ तमाला मलकीपत्रं अर्ककठवपूज
 न ॥ ॥ बालपत्र समीपत्र हिलायहल तमालपत्र अवलपत्र धर्म विष्णु
 पूजायायसप्रसक्त ॥ ॥ नानसिंह ॥ विल्वपत्रं वपुष्पश्च तं गनाउस्यपत्र
 कं ॥ गुलशीकृष्णगुलसी सशम्भुति कनंहनः ॥ ॥ विल्वपत्रं वृ हिलायह

प२ ल तुलसी कृष्ण तुलसी ध्वजन विष्णु यान नानं संतुष्ट याक ॥ ॥ तुलस्य गच्छ विः
 चानां नास्ति पश्ये जिगात्मना ॥ तुलसी कासिं वृत्तात्तं ध्वज आगच्छ लेसः
 असिम इति ॥ ॥ तुलसी पत्र मादाय यः कथा ति स मा र्व नं ॥ न पूनर्थ
 निमा प्राति मूकिला गी र्व द्विसः ॥ ॥ विष्णु आका दय कल र्व क्लस
 न तुलसी पत्र काया वृत्ति पूजा याग अक्षया पूनर्जन्म मूचाल दकि १२

मूकिला यि अक्षय ॥ ॥ गथा च ॥ समुद्र लिदले र्व क तुलसी र्व र्व दि
 गो ॥ कूर्च निपूजनं विष्णु र्व क गार्थः कलो यूरग ॥ ॥ तुलसिया मंजु लिह
 लन संयुक्त यादा अ विष्णु या पूजा या यि अ कं इग स अ पुनि स
 उन्न काया या सारु ल्ये ॥ ॥ दूर्वा हन किपा पाहि धात्री हति पात कं
 हनीत की हन डागं तुलसी हन गयं ॥ ॥ विष्णु यान तुलनु कायान

१३ नानापापनाशयाग अवलहल छायाग उपपागकनाशयाग हललहल
 छायाग नागनाशयाग गुलसीछायाग धस्वगांननाशयाग ॥ ॥ गुलसीप्र
 प्थानिर्णय नकनागिममाचर्न ॥ नस्याहं प्रणिगृह्णामि न पूजा दक्षवर्षि
 की ॥ ॥ गुलसीधर्माकदस्मर्न ॥ गङ्गा नडिगुलसीन पूजामयायु उक्तः
 यापूजा जिदगा जिनकायमखुधर्क श्रीकृष्ण नभूक्षादगधूलिनिमि १३

१२
 प्रिन गुलसीन विष्णु पूजायायमान ॥ ॥ आगस्थ ॥ विष्णुः शिवसिर्न्य
 स मकं श्रीगुलसीदले ॥ अनंतगुलदं विद्ध नमोच्चानपूर्वक ॥ ॥ श्री
 विष्णुया शिवस मंगुपलपाव गुलसी कुरुल छायाया अनन्तगुल
 लाक ॥ ॥ पूष्पनिर्नगत्रिर्न निर्मिर्नगुलसीदले ॥ माल्यमलयजार
 लिर्न दशाक्षीनाममृद्धनी ॥ किंनस्पवद्रुहियक्षः संपूर्णवनददि ॥

१४ लोः॥ किंतीर्थभवयादानेनूरुगुधतपसापिवा॥ ॥ गुलसीमालासभवगाहीदस्वान
नलोथाव हनाडा मालादयकः धतुली स्नानमालस श्रीखंडनलपनयाय ध
मालाश्रीनामया शिनसकाय थरथ पूजाया कफ्ता अन्नकउरुयादा
नकू संपूर्णददिक्षविद्यानकू समस्तदानयादानकू समस्ततीर्थस्ना
नयादानकू गडाधन्यतपस्यायादानकू यकू ददिक्ष तीर्थस्नान दा १४

न तपस्या धनयासिनें गुलसीमालहनाडा श्रीखंडनवालाडा कायाया अ
दीकरुललाक ॥ ॥ पूषाधाय ॥ वई पर्युषितं पूर्ण वई पर्युषितं ज
लं ॥ अ वई जादवीनायी अ वई गुलसीदलं ॥ ॥ समस्तस्नानं आसि
इलनास भालगमाल लंखडा सिमगडा गंगाजलडा सिइलसांभ
डा सदादपवित्र गुलसीपत्रंडा सिइलसां कायभडा सदादपवित्र

१५ ॥ गन्तुं पुनारक्ष ॥ गवामयत्तदाननः यत्कलं ल एगखग ॥ गुलम्याप्रद के कनः ग
 हलं कार्मिक स्मृतं ॥ ॥ श्री विष्णु गन्तुं कनः ह गन्तुं र गदान मिदाल
 १०००० वियाया गुलिरुल दग डालिरुल कार्मिकन विष्णुया क गु
 लसी क हल क्कयान उलिरुल लाक ॥ ॥ क्रिया सात्र ॥ सर्वः पूष्यः सदा
 पूजा विहिता विहितेऽपि ॥ कर्म व्यास सर्व देवानां ॥ र क्रिया र गग कानर्ध ॥ १५

क्कयमडाध क्कययास्वान मगडाध क्कययास्वान समस्तस्वाननं देवपनि
 सपूजायाय ॥ र क्रिया वन पूजायाय समस्तस्वाननं क्कयमडा मडा मगडाः
 विचालमड ॥ ॥ नृसिंह पूनारक्ष ॥ जाती पूष्य सहस्रक्षत्रवत्सालां सुरक्षा रनाः
 विष्णु विधिवरुक्कयत सपूष्य रुलं ॥ कल्पकारि सहस्राक्षि कल्पकाः
 ठिठातानिचा वस द्विषू पूने श्रीमान् विष्णु गुल्यपनाक्रमः ॥ ॥ जीलस्वानरु

१६ लंदा लच्छिन माल हकाडा रभा र लाग काडा विधि पूर्व कन विष्क्या
 त क्का या या र ल रं डा कल्प का टि दाल छि कल्प का टि ठा ग छि धर
 लिता विष्क्या उ नि प्र ना क्र म थू ला उ विष्क्या ला क स चा नि उ ॥ पया
 ध पि च पू पूष्पा धि ह नः प्री ति क ना पि ॥ अ पा मा र्ग न द लं पू र्ध त ना रं ग १६
 न कः स्म रं ॥ त स्मा च्च खा दि नं प रं अ मी प रं ग ना पि च ॥ दूर्वा प रं ग त नः
 धर

१७ रं ग त ना पि कू ष प रं कं ॥ विल्व प या द पि ह नः सु ल सी प रं मू र्ग मं ॥ हल
 नं स्वान नं विष्क्या प्री ति श ल अ पा मा र्ग री म ना उ ख य ल सि ह ल
 समी प रं गु ल गु कू ष अ मु ल ह ल च्वा ल प रं गु ल सी प रं ध रं रु पा ला
 डा डा ह या क थ नं १८ रं ग त मी थ ॥ न र क च न्द नं का तु ग ह्री
 या द क पू ष कं ॥ विल्व प रं सु ल सून ना च्च थ द व की स रं ॥ न क चं द

॥ २॥ अथ शिवस्तोत्रम् ॥

न क्वा दूस्वान विल्वपत्र व्यालव व्याल ध्वन न श्री हृष्ट पूजायाय मगडा ॥ ॥ मि
व ७ वपुष्पा ह ॥ कनवीना वक्क रवेव अर्क उत्तम कस्तुथ ॥ पागला ह हनी चैव
गथा च गिनि कर्षिका ॥ गथा का भस्म पूष्पा हि मंदा न भस्म पना जिगा मनी पूष्पा
हि मंदा न भस्म पना जिगा ॥ भस्मी पूष्पा हि पुन्ना गः कुकुर्क भस्मिनी गथा ॥ पूष्पा हि
वृक्ष हृष्ट गथा विल्वः शिव प्रियः ॥ कूर्म रस्म च पूष्पा हि गथा र्वै कू क मस्म च ॥
कनवीन स्वान वक्क स्वान अर्क पात दूधल स्वान पागलि स्वान लिर्क १ यावू गाः

७२ सुनंती निगधम्ना

२५ वशा यो लव ला ला व व्या ल पत्र क स म स्तान ॥ २

यूडा अरुनाति काठिवू चकसिवू हावू अरुनाति अमीस्वान नूपकअनस्वान
 ६वू लिस्वान कसनी संगंधइकोस्वान लसउत्पन्नइक जलसउत्पन्नइ
 कोस्वान धनः महादवयाककायगडा ॥ ॥ एविष्णु ॥ अर्कपत्रसहस्रयः
 कनवीन विक्षिप्रग ॥ कनवीनवीन सहस्रया विल्वपत्रं विक्षिप्रग ॥ अः
 नकपत्रया दालकिदन कनवीनस्वान प्रसक्त कनवीनया दालकि

१८८ न. विल्वपत्रं २४४ ॥ विल्वपत्रं नखरुहं सुखातिगं पूजयत्सहस्रं ॥ सर्वपाप
 विनिर्मुक्तः शिवलोकमहीयता ॥ सर्वं भद्रं शिवल्वपत्रं नखरुहं सनः शिवल्व
 गच्छात्पुष्पायागं ध्वजं सप्तपत्रं मूकश्यामं शिवलोकलारा ॥
 गथा ॥ कनकीचापि पुष्पं कन्यायूथी मंदंतिका ॥ शिनीप्रसर्जवन्धूक
 कसुमानिविवर्जित ॥ ॥ कनकीस्नानं माधवीस्नानं च होलस्नानं मंद १८९

न्तिका जलचाक्रलवर्धं सियावृद्धलिस्नानं धनमहादवयाकच्छायमगव
 ॥ ॥ गथा च ॥ कृष्णलोन्मग्निलकं कांचीवैवपनाजितां न कष्टकानिका
 पुष्पं गथान्पद्मवर्जितं ॥ मूकलेनार्चय हार्नं मलिनं न निवदयेत् ॥ ख
 यलमृगलयावृद्धलस्नानं कांचीस्नानं अरुनामिस्नानं लिक्कठकि
 लयावृद्धं गंधमद्रमवतास्नानं मूकलस्नानं सुखलिगठस्नानं धनं सु

लविठो ह्यास्वान क्लानिलाकनदवयातकयमभज ॥ ॥ पूष्पमाला
२० यां ॥ गुंजाप्रनातिनामर्दवनाहक्रानयासह ॥ भूमागकमिदं पूष्पं निषिद्धं
सूर्यपूजनं ॥ ॥ **वयमगलयाव** हाव अरुनातिस्वान ॥ इधलस्वानवानाह
क्रान्त ॥ अमलदासयाव ॥ **धनं सूर्यपूजा** समगता ॥ शिवायच निषिद्धं वै ॥ २०
वापूष्पं च कर्तव्यं ॥ ॥ महादेवयात ॥ **जिह्वालस्वान** ॥ **कर्तव्यं स्नानं**

यमभज ॥ ॥ गन्धर्व ॥ पशुपुविल्वपशु ॥ इवोक्ता सुकामलं ॥ नृषाम
लाहनु सदागुरुलनापि पूजयतु ॥ अङ्गुर्वाजलेवोपि नदरावपि
सर्पपैः ॥ सिमः ॥ गम्भापलाहनु ॥ मानसी ॥ एकिसावनतु ॥ ॥ **पशुदका**
स ॥ व्यालपशु ॥ व्यालपशु मदगका ॥ गुलगुकाय ॥ गुलनुमदग
का ॥ व्याल ॥ व्यालकाय ॥ अथवा ॥ अङ्गुनलं खनपूजा ॥ धनं मदगका

गवः प्रयुक्तानंगः। ध्वजः मदतः कावः मानसि र किन पूजायाय॥ अणवव
वनध्व॥ ॥ गरुडः अयागः गुलमीकृतावाहिकने समस्तस्वानं कायते अ
ध्वजः गरुडः अयाविसानमज्ञादा॥ ॥ ध्वजः लिखनीयास्वानज्ञाय॥ गर्ग
ध्वजः ॥ कूर्कः कूर्कः सितपद्मश्च नेकपद्ममहात्पलं॥ पान्दुनमनविन्दश्च नी
लात्पलश्च केवलं॥ गगनं किंकिलारश्च वक्त्रं वृहतीं अमीं कनवीला २१

कैलाशानि शिखिपामपनाजितां। अग्निमकं वकं चैव वन्धुकंदमनंगथा॥ सुन
लीं अक्षकीं द्राक्षीं यूपिकां नवमल्लिकां॥ मालतीं माधवीवृक्षं पुनार्गनाग
केशनं॥ जिष्ठीं सैन्यकं चैव कूत्रवकं कूत्रध्वकं॥ मार्घ्यं मईनमल्लिश्च कः
दम्बं अगपत्रिकां॥ विचकिलां कूर्मं रश्च मनूपयं ऊवाधुकं॥ अत्रलं कद
लीपूष्पं चाप्ययं वक्रिपूष्पकं॥ किंशुकं पानि एडं च ॥ अखाली आत्मकं

२२ नथा ॥ वर्धे लं न वली लक्षः स वन्निव दूर्ध्वं गथा ॥ मर्कुः विकटभीषं मर्दनी तुलसी गथा
 ॥ भिर्निर्घंटादिर्मपूष्यं वनमालां मनूवर्क ॥ कुमारीं हनवभीं च ॥ अस्त्रानं न वमाः
 लिर्की ॥ मधूनि कां कुविकां शगिनिर्घं पनाजिगा ॥ हंगना कुमगिच्छं ॥ अग्निद्याली ग
 थेवच ॥ नागवल्ली दलश्च व ॥ अश्वत्थप्रेक्षवं गथा ॥ सिद्धवा लं पलायस्य ॥ च्छंदं दृष्ट्वा
 दूले नथा ॥ जलजः सलज्जनेतः पूष्येभ्यो निरक्षयैः ॥ पंचवहोभ्यवृत्तमेः पूः २२

जयजुगदीविर्की ॥ ॥ कुंजकंधायास्वान पलस्वान स्याउपल ॥ अतपल तायूअपल
 नीलउशाल चउलस्वान तंगलायस्वान किं किलागस्वान वकूलस्वान लिर्की ॥
 किलियावृ ॥ अमीस्वान कनवीनस्वान अर्द्धपात गुल्वाउयावृ सिंस्वयावृ चप
 दूलि माधवी वकस्वान वधूलिस्वान धडांस्वान नस्वाडाअथादस्वान अक्षकीया
 वृ वृपागकास्वान उथिस्वान सूरवदानस्वान जीलस्वान गुजिलस्वान लामल

२३ वृद्धदरुस्वान वासियाव नृपकथनस्वान नीलकालतस्वान सिधिस्वान काडकातल
 स्वान अयुक्तातलस्वान दाशालस्वान अदं वसियाव वधलिस्वान कदं वयाव न
 हास्वान विचकिलास्वान कसूमस्वान मलस्वान डिगहालस्वान एगुस्वान लाहाः
 वृ नीपयाव पानिजाग सिमलसियाव वदलस्वान नीलकसूमस्वान सिडागि
 स्वान कसिस्वान आदिन धीसियाव अजलदूलिस्वान मर्दगी गुलसी मलवा २३

इथसिमानं प्रचाव

अ३ २० अजिलस्वान कदूलस्वान गायस थिस्वान २
 मलयाव वनमालास्वान लडाहस्वान नायुडावकसिव काउवकसिव कूल
 स्वान अवस्वान लक्ष्मीस्वान सवलस्वान नीलकसूमस्वान मधूलस्वान डक
 लस्वान नायुहनिस्वान हीमनाड मालपस्वक धउस्वान ग्वाल डालनैगे
 हल वासिद्यालि लाहसियाहल जलसउगुपन्नइका लसउत्पन्नइक
 स्वानन पंचवर्धुस्वानन जगदंविक्कापनमध्वनी पूजायायनडा ॥ धन सामा

२४ नवचन॥ ॥ बृहत्कीक्रम॥ नकपद्मसहस्राक्षि. मनसायः प्रयच्छति। कल्प
 कोरिसहस्राक्षि. कल्पकोरिभगानिच। छिन्वायवीपूनेष्टीमान्. रत्नानाजा
 किमोरेवम्॥ ॥ काउपलस्नान. दालकि. स्वप्नसन. मननरात्रेपाडा. पन
 मध्वनीयोगकायडा. डाकमनूष्य. कल्पकाटि. दालकि. कल्पकोरिभ
 गकि. धर्मकाल. दवीयापूनसचाडा. धनंलि. पृथिवीसनाजाइयाडा. २४

जन्मका०डा॥ ॥ रोगेनीयामल॥ चंपकेर्था ननादवीत्यजगकालिकामि
 ह॥ गम्पपूष्पसमारव्यातुं। वक्त्रधपिनभक्त्रग॥ गम्मात्सदापूजनीया. चं
 पकेः पार्श्वतीवरेषुः चंपस्नानन. स्वप्नसनूष्यन. कालीदवीपूजायाग. ध्व
 क्तयापूष्प. वक्त्रार्धगर्पकायमदू. धर्मकानधनज्ञानीसन. चंपस्नानन. एवा
 नियापूजायायमाल॥ सदाह॥ ॥ गम्मेव॥ कालिकाआननंप्रीप्ता. पूजयडा
 पनि२

२५ जचंपकेः॥नरस्यपूजनादृष्टिःसंसाधनसाननूपिधी॥ ॥**गामननूपन**प्रीति
न कालिकापनमध्वनी नाजचंपस्वानन पूजायायुः ॐ नमनूपया ध्वसंसा
नसजन्मकायमूचाल॥ ॥शिवनहम्प॥विल्वपत्रेनखरहोष्ठ्य सहद्वीप
पूजयत्॥सर्वपापविनिर्मुक्त शिवलाकेमहीयत्॥खंडितमशुडविल्व २५
पत्रेन एवानीकुप्राप्तपूजायादान समस्तपापनमूकशया ॐ शिवलाकस

अनीडा॥ ॥पूषमालया॥धूसूनकेष्वयादवीं सहस्रपूजयत्तननः॥संगलकरुल
प्राप्य लएतपनमंयदं॥ ॥**गवक्षसेन**इधलस्वानन कुप्राप्तइकी एवानीपूजा
यायुः ॐ नमन लकक्षि १००००० सादानवियायायुललादा ॐ पनमपदला
त ॐ नमन॥ ॥शिवनहम्प॥हृहरीकूमभे एकूयादवीं सहद्वैयत्॥
गवामयुतरुलेप्राप्य शिवलाकं पत्रं वडत्॥ ॥**गवक्षमनूपन** लिक् ० कि

२६ लिखावून कृपालकृष्णद्वीपूजायायिडा. एकिन. अक्षसेन. डि. दोल १०००० सादानविद्या
 याकललाडा. शिवलाकसअनिडा. ॥ श्रीकृष्ण ॥ याननः पनयाप्रीत्या मालगीकस
 मेर्यजता ॥ जायत सर्वसिद्धिस्तु. कृष्णवर्णवर्षाप्रतां ॥ ॥ ग्वक्षमनूष्यन. पनमप्रीति
 न. जीलस्वानन. विपूनसुंदरीकालीपूजायायिडा. अक्षयासमस्तसिद्धिइयिडा.
 कृष्णवर्ण. ननानंदनिडा. ॥ ॥ हृक्षीकृष्ण ॥ याननः पनयाप्रीत्या. मालगीकस २६
 मेःशुभः। पूजयत्तु दक्षानुगः ॥ ग्वक्षमनूष्यन. पनमप्रीतिन.

जीलस्वान. विपूनसुंदरी. कालीपूजायायूडा. अक्षमनूष्ययावस्यस. समस्तसि
 द्धिअनिडा. ॥ ॥ सिद्धिसमस्त. धडा. लिडा. २३ यिडा. ॥ रमेनीयामले ॥ यान
 नः पूजयद्द्वी. मनूरहोः कनवीनकेः ॥ सर्वसिद्धिसलक्षण. अचिनान्ताप्रसंख
 यः ॥ ग्वक्षमनूष्यन. कादूकनवीनस्वानन. द्वीपूजायायूडा. अक्षमनूष्य
 न. तत्कालनसमस्तद्विलायूडा. ॥ ॥ नरोव ॥ अनूरहोः कनवीनेध. सुन्दरी. था

२७ हि पूजयन् ॥ सननः सिद्धिमाप्नोति वत्सनाच्चाग्रसंभयः ॥ ॥ द्वादशकनवीनस्वान
न ग्वक्षनः प्रिपूतसूदनी पूजायायि ॐ ॐ क्षनः दक्षिणथिः सिद्धितायू ॐ सूव
र्धुदानं रणदानं मध्वदानं तथेव च । कनवीनस्य पूजायाः कर्त्तानां हर्निषा ७७
॥ कनवीनस्वाननः पनमध्वनी पूजायाहाया पूरायया डिमखवी सच्चिवापू
षः लूदानः सादानः सलदानयादानं मलाक ॥ आननः प्रीतिर्संयुक्तः कन २७

वीनः सिद्धेय्युत्तम ॥ पार्वतीनस्य वभगजाय भनाग्रसंभयः ॥ ॥ ग्वक्षमनूष
नः प्रीतिनसंयुक्तश्चाहा गायू ॐ कनवीनस्वाननः पनमध्वनी पूजायायि
ॐ पनमध्वनी ध्वक्षयावस्यश्चयू ॐ संदहमस्वात ॥ ॥ आननः पूजयन्काः
लिः सुन्दरीः सिद्धिदायिनिः । वंधूककसूमेद्वीः आननाय उभमूदा । लक्ष्मीक
स्य गृहसाक्षा निवासमधिगच्छति ॥ ग्वक्षसनः कालिप्रिपूतसून्दरी प्रिपूत

सूक्तनीशुचिडागधिंरुधालसा. सिद्धिविद्याडा विद्याकस्त. ध्वक्तयान. वधूति
स्वानन. नसन. २॥ सैनपूजायाग. ॐ क्तयाकुस. सादागुल. लक्ष्मीनवासयायुडा. ॥
याननः पूडयद्वी. ऊवापूषेननन्यधीः. गृहगस्पनिवासः स्यान्नदम्पः श्रीक्ष
कनाकुया. ॥ ग्वक्तमनूषन. जिनशातस्वानन. नृकविदूयानाडा. पनम.
ध्वनीयापूजायायुडा. ॐ क्तयाकुस. श्रीमहादेवयाभूज्ञान. लक्ष्मीनवास २८

यायुडा. ॥ ऊवापूषेर्ननायमु. एवानीमधिकयऊत. ॥ ससिद्धिनगुलागस्प. जायग
वत्सनानन. ॥ ग्वक्तमनूषन. जिनशातस्वानन. एवानीपूजायाग. ॐ क्तया. दक्षि
नधि. भूगुल्यसिद्धि. उत्पन्नशुचिडा. ॥ ॥ क्रियासात्रा. ॥ याननः पनयाप्रीत्या.
दाडिमीकसूमेर्यऊत. ॥ श्रीएवानी. पनांगस्प. जायग. सिद्धिनूमा. ॥ ग्वक्त
मनूषन. पनमप्रीतिन. धालवृतिस्वानन. श्रीएवानीपूजायायु. ॐ क्तया.

नमो भद्र सिद्धि जायल प्रहला ॥ ॥ गोत्रियामला ॥ आननः पूजयेत्कारिः जानी प्रधेः
 सुरभा एनेः सिद्धया वधग ॥ सुस्य ॥ आयननाग संभयः ॥ ग्वक्कमनूषन ॥ एीदुडील
 स्वानन ॥ कालिपूजायाग ॥ ओक्कया समस्त सिद्धि ॥ वधइल ॥ मइयूधक ॥ संद
 ह ममाल ॥ ॥ गयेव ॥ आननः कमलोद्देवी मनूखः सुन्दरीयङ्गु ॥ सिद्धयस्त
 स्य जायने रूकि मूकि प्रदायकः ॥ ग्वक्कमनूषन ॥ कादूपल स्वानन ॥ गिप् २
 न सुन्दरी पूजायाग ॥ ओक्कया ॥ समस्त ॥ सिद्धिइल ॥ उकि ॥ मूकि ॥ ओक्कयाग विले ॥

तयेव ॥ ॥ रूधनेर्यः कमलोद्देवी यङ्गु प्रीति संयुतः ॥ वाक् सिद्धि प्रपनां यागि वत्स
 नान्नात्र संभयः ॥ ग्वक्कमनूषन ॥ गायुडा पल स्वानन ॥ देवी पूजायाग ॥ प्रीति नम
 सकयाडाडा ॥ ग्वक्कमनूषन ॥ वाक् सिद्धि लायुडा ॥ दक्षिणधि ॥ थूगूथास ॥ संद ह
 मूखाल ॥ गोत्रियामल ॥ योनना नील कमले ॥ श्री अर्वा पूजयेत्सदा ॥ नाजा सम
 स्तवसगा ॥ आयननाग संभयः ॥ ग्वक्कमनूषन ॥ नील उफोल स्वानन ॥ अर्वा

३० पनमध्वनी पूजायाग आश्रया वस्य सना जापनि इतः सैव ह मूमात् ॥ ॥ शिव
नहसा ॥ सध्वं षोम वपूष्यानी प्रवर्तनील उत्पलं ॥ नीलोत्पल सहस्रं धया ना
लां संप्रयच्छति ॥ शिवाये विधिवदुक्ता न स्य पृथक् रुतं धू ॥ कल्पकाटि स
हस्रानि कल्पकाटि क्षतानि च ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ शिव गुल्यपनाक्रमः ॥
समस्तस्वानन्दकासरक्षुष्ट नील उत्पलस्वान गवक्षस न नील उत्पलस्वान ३०

४३

क्षालयिष्ये शालयामालदयकाऽऽ विधिरथ श्रीरवानियारकाल धगुलिमाः
लाक्षायाश्च रुतः ४० कल्पकाटि सहस्र कल्पकाटि क्षतानि धलिना शिवला
कस शिव उतिपनाक्रमधूलाऽऽनानि ॥ ॥ वक्ष्यामल ॥ अन्त्यान्पिचपू
ष्यानि सूनरीनि महात्मना ॥ एवाभ्यर्च्य अद्वैत किमुक्तिरुलापय ॥
यस्मिं पद्मरुतपूष्य साधकस्य एव क्रविः ॥ तदवद्वै मनूना अर्पयः

३१ कंकनाकृत्या ॥ भवतासुर्गंधस्वानदकः क्षानिक्तवः शुक्तिमूक्तिरुललाययात
 श्रीरवानियागच्छाय हन्वं ग्वद्व्यां हलसशलसां ससावसाशलसां स्वान
 शलसां ग्वगुलिनूचिशलः आगुलिवम्भु मनुपलपाडाच्छाय ध्वष्टीमहाद्व
 याभूद्धा ॥ ॥ कनवीनमाला ॥ कनवीनमुद्रारिम्भु यम्भुसंपूजयच्छिर्वा ॥
 भूनिष्कामरुलंप्राप्य सूर्यलोकां महीयत ॥ ग्वद्वसैन कनवीनस्वा ३१

नया मालान एगवगी पूजायायुडा आद्वसन भूनिष्कामकृत्यारुलला
 षाडा सूर्यलोकां सवासशल ॥ ॥ पद्ममाला ॥ पद्मपूष्पमुद्रारिम्भु यज्जन
 पनमध्वनी ॥ आनिष्कामरुलंप्राप्य सूर्यलोकां महीयत ॥ ॥ ग्वद्वसैन प
 द्ममालान पनमध्वनी पूजायात आद्वसन आनिष्कामरुललान अंत
 कालससूर्यलोकां सवासशल ॥ ॥ वक्पूष्पमाला ॥ वक्पूष्पमुद्रारिम्भु

पूजयश्ममुचशुको॥ वाजपयस्ययस्सुस्यरुलंविन्दतिमानवः॥ ग्वक्कसनः सु
 कुंदनाजस्वानमालानः एवानिपूजायागः ॐ नमनूष्यनः वाजपयस्ययस्सुयाहा
 यारुललागः॥ ॥ द्वाभपूष्पमाला॥ द्वाभपूष्पमुज्जारिमुः पूजयश्ममुकुवि
 को॥ नाजस्यरुलंप्राप्यः ॐ कलोकमहीयत॥ ग्वक्कसनूष्यनः वृषगकास्वा
 नमालानः कुविकोपूजायागः ॐ नमनः नाजस्यजस्सुयाहारुललाहा ॐ
 न्दलाकसवासइयुता॥ ॐ मीपूष्पमाला॥ ॐ मीपूष्पमुज्जारिमुः आर्योर्हपू
 या

३२

अथ
 अथुदया॥ ग्वसहंरुलंप्राप्यः विष्कलोकमहीयत॥ ग्वक्कसनः ॐ मीस्वान
 मालनः आर्योपनमः ॐ वनीयापूजायागः अथुदपूष्पकनजी कनः दालकि
 सादानविद्यायारुललाहा ॐ विष्कलोकसवासजनिता॥ ॥ कूष्पपूष्पमा
 ला॥ पूजयित्वागुआदेवीः अथुदयाविधिवक्त्रिवां॥ कूष्पपूष्पमुज्जारिमुः
 प्रित्कलोकमहीयत॥ कूष्पवमालानः अथुद्वानः ॐ ॐ वनीयागकायारुल
 नः प्रित्कलोकसः आनंदनवा निता॥ ॥ सुनरिद्व्यसिनः पूष्पमाला॥

३३ सृगन्धिगन्धपुष्पैस्तु पूजयेत्तु कुविकां । अनया मालया वापि सा उद्धमध
 रुलेतलरुत ॥ ग्वक्षसन श्रीखलु आदिन न साक वस्तन चिछाडा गया स्वान
 नन अथवान साकन छिना स्वान मालन कुविकायात उक्कसन अथ
 मधयस्तु आदा रुतला रुडा ॥ ॥ विल्वप्रमालाया ॥ सुवर्णनी सुवर्णस्य ॥
 नदस्तु यत्तुलं ॥ तत्तुलं तलरुगवीन पूजयेत्तु कुविकां ॥ ग्वक्षसन ३३

विल्वमालान रुवानी पूजा याग उक्कन वदसडा क्कवा क्कन याग १००
 माला लुदान वियाया रुतला ग ॥ ॥ विल्वप्रमाला द्वयस्य ॥ माला द्वयन सं
 पूजयेत्तु क्काधीना हिचलिकां ॥ नाडस्तु यत्तुलं प्रोम् विल्वप्रमाला संख्या ॥ क्कानि
 क्कन रुकिन विल्वप्रमाला न रुवानिया पूजा यागीडा उक्कया विल्वप्र
 माला रुतला काया या संख्या न क्कपाल क्कपाल नाडस्तु यत्तुलं यादाया रु
 कुहल १

३४

नेत्याग ॥ ॥ हं म पूष्पा ॥ मणिभोक्किकमाला ॥ विगानश्चसमूहलं ॥ चंठादि
 सर्वदादत्वा ॥ हं म पूष्परुलंलरु ॥ मणिमाला ॥ मोकिमाला ॥ लीळूला
 ६ ॥ च ॥ आदिन ॥ सदाकालं कृथाया ॥ गुलिरुलदग ॥ उलिरुल ॥ लूगई
 ल ॥ स्नानकृथायान ॥ रुललाक ॥ ॥ जातीपूष्पमालादानवाक् ॥ अथ सर्व
 सिद्धित्व ॥ कृवन्नवद्वनाद्युत्तप्रताप ॥ गुलवाक् सिद्धिकामनया ॥ अनया

३४

जातीपूष्पमालाया ॥ रगवतीमहंपूजयिष्वा ॥ डीलस्नानमालकृथायावाक्थथ ॥ स
 मस्तु सिद्धिकृवन्नयार्थि संपत्तिं ॥ अगुलप्रताप ॥ वाक् सिद्धिधनं रुललाय ॥ ॥ दवी
 पूना ॥ ॥ दमनपूष्पस्यदानवाक् ॥ अथ ममउन्माजितपापक्षय ॥ सर्वभोग
 यथाप्राप्तिवदूपूष्पप्रवृद्धिकामनया ॥ ॥ मां दमनपूष्पमालां ॥ श्रीरुद्रकाल्यैः
 ॥ अहंदद ॥ श्रीरुद्रकालीयाग ॥ धनस्नानमालाकृथायायरुल ॥ अनकउ

नमनया हापाय नाशयुज समस्तसोय ध्यापिहूडा धर्मनिमित्तिन धडा
३५ नस्वानमालाकाय अनिरिह ॥ चंपूष्पमालादानवाक् ॥ अशसायुशकाम
नया चंपूष्पमालया एगतीमहंपूऊयिध ॥ चंपस्वानमालनएवानियातकायाया
सायुशमाकरुल ॥ ॥ नकेपद्ममालादानवाक् ॥ अशसर्वजन्मार्जितपापविभाजन
काम गदनकनसूखप्राप्तिकामः गतः कल्पकारिसहस्रानि कल्पकाटिभगानिच ३५

दवीपूभवासकामन अनयात्रकपद्ममालयाशी एगवतीः पूऊयिध ॥ एगवतीयाग
काउपलस्वानमालाकायायारुल अनकजन्मनयाहापापनाश समस्तसूखप्रा
प्ति कल्पकादलक्ति कल्पकाटिभगक्ति धर्मकालदवीयापूनसवास धर्थिह
रुलकाउपलस्वानमालाकायायारुल ॥ काथयावाक् धर्म ॥ कूमूदपूष्पमा
लादानवाक् ॥ अशममसर्वपापदय वदूपूष्पप्रवृद्धिकामन ॥ मांकूमू

३६ दपूष्पमालां. एगवती एड्कालो तुल्यमहंदद ॥ चडालस्वानमाला क्वाययावाक् ॥ स
 मस्तपापदयइरूडा. अधिकपूष्पवाधयइरूडा ॥ ध्यारुल ॥ यामल ॥ वंधूकपू
 ष्पमालादानस्य ॥ अशसोदर्यो लक्ष्मी प्राप्ति कामनया ॥ मां वंधूकपूष्पमालां.
 एगवती अहंदद ॥ एगवती याग. वन्धूलिस्वानमाला क्वाययावाक् रुल. सुंद
 नइयिडा. लक्ष्मी प्राप्ति इरूडा ॥ ॥ हहक्कीक्रमभा ॥ दाहिमीपूष्पमालादान ३६

वाक् ॥ अशसर्वपापदयका मपूर्वक. सोदर्यो सोराग्य प्राप्ति. पुनर्जन्म निवृत्ति
 कामनया. दाहिमीपूष्पमालया. एगवती महंपूजयिष्य ॥ ध्यालपूतिस्वान. क्वा
 ययावाक् रुल ॥ एगवती याग क्वायान. समस्तपापना भइयिडा. सोदर्योला.
 पूडा. सोराग्य प्राप्ति इयिडा. पुनर्जन्म मूस्वालिडा ॥ ॥ अगिनी नहस्था ॥ कर्तु
 कामपूष्पमालादानस्य ॥ अशसर्वपापदय. सर्वसोराग्य प्राप्ति. स्वकडय ॥

३७

प्राप्तिकामनया ॐ मां संगुच्छिन्नकर्मिणः कानपूष्पमालां रगवतीं अहं दद ॥ रगवती
 यानः वरहसि स्यादुनः मालहृदा उच्छ्रयया वाक् ॥ रूलः सर्वपापक्षयः सौ
 राग्य रूलः संग्रामसखपूजय प्राप्तिरूलः समस्तसुखप्राप्तिरूलः अंगका
 लसः इग्नेयासेवकश्चाउः दवीलाकसवा सइ ॐ ॥ अथ संकल्पः ॥ अर
 यतपः श्रीलगुरुणा परः वद पानगवाक्ष्मणसंप्रदानकः दशसुवर्गद्वयनजन्य ३७

रूलसमरूलप्राप्तिकामाः रगवतीममितिः पूष्पपूजयिष्य ॥ ॐ निशामान्य
 पूष्पसंकल्पः ॥ ध्वजसामान्यस्वानया संकल्पः ॥ ॥ ध्वजसिर्ववलीस्वानया
 संकल्पः ॥ अथ अखिलानुकामानुप्राप्तिपूर्वक इग्नेनूचनत्वरवनकाम
 नयाः ॐ ऐर्मेलिका कूसुमेरुवानिमहं पूजयिष्य ॥ ध्वजसिर्ववलीस्वान
 या संकल्पः ॥ ॥ उत्पलपेक्षः श्रीमीपयः पूनागः चंपकः कर्मिणः कानपू
 मि २

३८. अ. कनवीन. क्षमीपूष. कुमूद. नागकक्षत्रपूष. पूजन. अगदव. रु. लं. ॥ ३
शालस्वान. प्रलस्वान. क्षमीपूष. वा. सियाव. चंपस्वान. वगहल. सियाव. व.
 पगकास्वान. कनवीनस्वान. क्षमीस्वान. चडालस्वान. नृमकक्षत्रस्वान.
 धर्मस्वान. क्कायाया. रु. लं. ॥ ३. चं. वं. ली. स्वान. क्कायाया. रु. लं. ॥ ३. **उगिरु. लं.**
 इ. ली. ॥ **धर्ममान्यवचन.** ॥ विल्वपत्रार्चनस्य ॥ संकल्प ॥ अथ पत्रमयव ३८

ताप्रीतिकाम. अरिर्विल्वपत्रे. एगवती. महं पूजयिष्य ॥ **धर्ममान्यवचन.** ॥ संकल्प
 ॥ अथ धि. त. विल्वपत्र. नृया. र्चनस्य ॥ वाक् ॥ अथ सर्वपापविनिर्मुक्त. शिव
 लोक. महान्त्व. काम. अरि. नख. धि. त. विल्वपत्रे. एगवती. महं पूजयिष्य ॥ म.
सं. रु. गु. सि. वाल. पत्र. क्कायाया. वाक् ॥ नाना. पूष. समुच्चय. स्य. वाक् ॥ अ.
 सर्व. भु. ए. न. वा. फि. काम. नृ. गानि. नाना. पूष. समुच्चयानि. स. विल्वपत्रानि

३२ रगवतीगुभ्यमहंदद ॥ नानास्नानसमूहं व्यालपयसहितनक्षीएवानीयाक-
यथावाक् ॥ ध्वन ॥ ॥ असंग्रथितपूष्पाक्षंवाक् ॥ अद्यनुतावत्पूष्पसमसं
त्ययाः सुवर्णनिष्कदक्षानुदानउत्तरुलप्राप्तिकामनुतानि असंग्रथितपू-
ष्पानि देवीरगवतीगुभ्यमहंदद ॥ ध्वनस्नानमहस्यं ग्वलमूदाउ-
यथावाक् ॥ ॥ संग्रथितपूष्पाक्षंवाक् ॥ अद्यतत्मातास्तुपूष्पसमसंस्वा ३२

सुवर्णनिष्कदक्षानुदानउत्तरुलप्राप्तिरुलकामनयाः अनुतानिग्रीथितपूष्पा-
क्षिरगवतीगुभ्यमहंदद ॥ ध्वनस्वाकस्नानच्छायथावाक् ॥ ॥ अन्तिपू-
ष्पसानसंग्रहसमाप्तम् ॥ ॥ ॥ अरुमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

४० १ॐ नमो गुणवनमः ॥ ॥ पश्चिमाश्रयादिक्रमपूषमाहात्म्यम् ॥ ॥
जातीचपाठलीयूथी चंपकैरुष्यत उत्पलेः । कंगकीहमजातीच मृदुले
क्षतपत्रकैः ॥ वन्धूकपूषकदाख्यैः सानपूषोष्यपानलेः ॥ कूसैरुः किं ४०
शुकेः पूषैः पुनारगेर्नागकक्षनैः ॥ वकूले सुगने श्वान्ये वैचकदाख्यसं

वैः । कामभङ्गादुर्वेद्वी । तिसंरुधेः कर्णिकानकेः ॥ नकात्यले महापूषैः
र्यवान्प्रचानूगन्धिनः ॥ ॥ डीलस्वान पानलिस्वान डिथिस्वान चंपस्वान
वडालस्वान कंगकीस्वान भूडीलस्वान तृमिस्तस्वान तशस्वान पलस्वा
न वधूलिस्वान दालस्वान कादूपातुलिस्वान कसमस्वान लाहवू
वासियावू नृपकक्षनस्वान वकूलस्वान वृन्दकमलस्वान गगनायस्वा

दाहालस्वानयाविष्णु

४९ न वचर्कद काशिव् आसानसियाव् गिरुस्वान वगहसियाव् छाउचअ
लस्यान भवगा रीरु रीरु अगिनस्वाकस्वान धर्मस्वान पष्चिमास्त्राय सक्त
यगो ॥ ॥ अथवाक् ॥ अथ ----- प्रुष्पभगगुधवृद्धिकामनरिजोः
मिपूष्पैः कृत्तिकादवीमहं पूजयिष्ये ॥ समस्तस्वानक्रायस धगुलिवाक् ४९
नंयाय स्वानयानामश्न विष्णुयाय ॥ ॥ अथविष्णु ॥ र्किं सुकिप्र

दाजागी मालाचवलवर्द्धिनी ॥ ४९ पारंगली कादवी ददनिचमहशभः ॥ ४९
किपूष्पिकेनपद्यं भगपतं सुपूयकं ॥ वन्धूकं वम्भदं प्राकं तथा नका ४९
मानकं ॥ शौरागप मालतीपूष्पैः मूजनं सुखदायकं ॥ कदम्बवकुलं कू
र्द वचर्कदायनाभन ॥ कूर्मं र्किं शुकेर्दवी वम्भमाहृष्टिकानका
महालक्ष्मीपूष्पैः पूर्णागनागकभन ॥ नकमूत्पलकं वम्भ नीलकण्ठ ४९

४२ मानरक्षा॥ गिरिर्ध्वजः सर्वेषु पुष्पैः क्रमजगत्पार्वथ्यत्सदा॥ तस्य विघ्ननजायकं स
त्यमंगनसंभयः॥ ॥ एकैकमुक्तिरुल्लेखकामनुतिर्जगति पुष्पैः कृद्विकामः
हंपूजयिष्ये॥ ॥ जीलस्वान-कृद्विकारागकृययावाक्कथं॥ पुक्तिमुक्तिर
ल्लेख॥ ॥ ध्वज-मालापुष्प-वलविवर्द्धनकामः सर्वे पूर्ववत्॥ ध्वजवशात् ४२
लव्यावाक्क॥ ॥ ४४ धनपातलिपुष्पस्य॥ अशमहायकप्रतिकामनुतिः ४४

गपाटलिपुष्पैः॥ गायपातलीस्वानया॥ ॥ प्रदम्पुष्पस्य॥ अशमनिपुष्टिका
मः नृतिः प्रदम्पुष्पैः॥ प्रलस्वानया॥ ॥ वन्धूकस्य॥ अश्ववन्धूककामः नृतिर्वन्धूक
पुष्पैः॥ वधूलिस्वानया॥ ॥ नकेपाटलिपुष्पस्य॥ अशमानककामः॥ काउपाट
लिस्वानया॥ ॥ सानपुष्पस्य॥ अशमोराग्यकामः॥ धूसियावू॥ ॥ मूङ्गर
लपुष्पस्य॥ अशस्त्रमप्रतिकामः॥ लगिसूतस्वानया॥ ॥ ४५ धनपदम्

४३ स्था॥ अश्वत्थपुत्रकामः॥ अश्वत्थपुत्रकामः॥ ॥ कंदवपुष्पस्थ॥ अश्वत्थपुत्रकामः॥
कामः॥ कंदवपुष्पस्थ॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थ॥ अश्वत्थपुत्रकामः॥ वक्त्रपुष्पस्थः
स्था॥ ॥ कंदपुष्पस्थ॥ अश्वत्थपुत्रकामः॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥
स्थापि॥ अश्वत्थपुत्रकामः॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ कंदपुष्पस्थः॥ ॥ कंदपुष्पस्थः॥
पुष्पस्थः॥ अश्वत्थपुत्रकामः॥ कंदपुष्पस्थः॥ ॥ कंदपुष्पस्थः॥ ॥ कंदपुष्पस्थः॥

स्था॥ ॥ पुत्रागनागकंदपुष्पस्थः॥ अश्वत्थपुत्रकामः॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥
वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥
वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥
वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥
वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥ ॥ वक्त्रपुष्पस्थः॥

३०० अरिमुलसीमंऊनीतिः॥गुलसीमंऊलीया॥५३

४४ षस्य॥अशसर्वपापदयत्वत्रिर्दमनपूषःकृद्विकादवीमहंपूऊयिष्या॥
धनधनस्वानया॥॥गुलसीपगुस्य॥अशसर्वपापदयत्वकामनरिमु
लसीमयैः॥गुलसीहलया॥०॥सिन्धुनीनकप्रिसन्ध्यापूषस्य॥अशव
ध्याओकर्षधमानधसर्वविद्युविनाभत्वकामनरिःनकप्रिसन्ध्यापू ४४
ष्यैः॥काउतिभूलस्वानया॥॥कनकीपूषस्य॥अशसमृद्विरुलः

प्राप्तिकामः॥कनकीस्वानया॥॥कनवीनमाला॥अशअनिक्षामयदू
रुलप्राप्तिकामः॥कनवीनस्वानसावया॥॥पद्ममालाया॥अतिक्षामय
रुलरुलप्राप्तिकामः॥मेलस्वानया॥॥नहस्यकक्षालिन्या॥वंपकादिस्वा
नपश्चिमान्नायसङ्कायगडा॥॥धर्मपश्चिमान्नाययास्वानकायगडा॥
शुभम्॥॥॥॥अथउरुनाम्नायस्य॥हनावलीति॥महाकाल

संहितायां च ॥ क्षित्रीयैः कर्षिकामैश्च चंपकैः काविदानकैः ॥ वकूलैश्चैव
 मंदारैः कुन्दपुष्पैः कनकैः ॥ लताहिरवृक्षवृक्षस्य मृदुवृक्षैश्चैव नपि
 ॥ कांचनाद्यैश्चैव पुन्नागैः केतकीयैः ॥ मालिकाहिर्युथीहि
 र्जातिहिर्यैश्चैव नपि ॥ क्षतवर्गैर्मालिकाहिः न स्नानैर्विधुजीवकैः ॥ मि
 रीहिश्चैव जवापुष्पैः कनवीनैश्चैव किंशुकैः ॥ पानिजामैः पाटलैश्चैव पर ४७

मनीलात्पत्रैश्चैव नपि ॥ माधवीहिर्मनवकैः नपनाडिगया अपि ॥ तिनिरुद्धैश्चैव
 दाक्षपुष्पैः सकलैः ॥ अर्जुनैश्चैव समैश्चैव ॥ द्रवीमाधकसदृशः ॥ ॥ ज
 लैश्चैव केलवुः वगहलमियावुः चपस्वानः कद्रुमियावुः वकूलः चक
 सिवुः छाशालस्वानः कोलागस्वानः लाहलियावुः गुलगुः लूगइल
 स्वानः भूरुक्कस्वानः नूपकैश्चैव नपि ॥ कनकीस्वानः पानिजामस्वान

जिथिस्वान्. जीलस्वान्. धडानस्वान् गशालस्वान् चंथलिस्वान् सचलस्वान् वधू
लिस्वान् त्रयसचलस्वान् सिथिस्वान् जिनशालस्वान् कङ्कडालस्वान् नाहासिवू
गायवकसियावू प्रागली. पलस्वान् उशालस्वान् माधवी. समलसियावू अूपर
जागिस्वान् जेनसियावू कदम्बियावू वूपतकास्वान् वासियावू ध्वगस्वान् न ४६
साधकन उग्नान्नाययादवीपूजायाथ ॥ तथाच ॥ विल्वप्रगं गथाप्रीतिर

कनं दद्यावनामनं नगथान्पत्किंचिदस्ति पूष्पपूषीतिकात्रकं ॥ अग्रायत्नेनदा
नव्यं विल्वप्रगं विप्रययूक् ॥ ॥ विल्वप्रगं रघुकालिया अगिप्रीतिरुडा व्या
लप्रगप्रीतिरुडा रथ. मवगास्वानन. प्रीतिमरुडा ध्वगनिमिदिन. उगनपूर्व
कन. स्वहलदयकं व्यालप्रगकायमाल ॥ ॥ अथनेमिदिन ॥ यथा ॥ प्रार
थ्यं वकुलानां हि. वेसाखमासिकात्रयतू ॥ नागकठनपूष्पाणां अक्षमाधि

४७ कमाचनरु॥ आषाढगुप्तकर्तव्यः कनवीनस्यसकथः॥ चंपकीत्यलपद्या
नां हयमुनेरसिधिरु॥ वाइत्यभाद्रपुष्यस्य मासि एतदप्यवत॥ अग
स्त्यकुसुमानां हि हनिताकार्तिकचतुर्था॥ अभिक्कविल्वपयाध्यामागर्ज
शीर्षसमाचनरु॥ पौषदूर्वाक्षुत्रानाहि सन्धाहतिरुलपदं॥ कुन्दसुता
माद्यमासि सर्वकल्याणकानकः॥ रत्नगुणमाधवीपूष्पं सर्वसिद्धिवि ४७

धीयग॥ वैशखकस्य कलिका कलिकालविनासिनीः॥ ॥ धनलि मासमास
सत्त्वान काययावाक् उक्तनाम्ना यदवीयार्क॥ ॥ वक्रालास॥ अथर्वेक्षार्ध
मासि प्रविष्टकूलपूष्पः श्रीगुप्तकादीदवीमहं पूजयिष्य॥ वक्रालासवकूल
स्वानच्छाय॥ १॥ प्रवक्ष्ये नागकेशन॥ नच्छालासप्रकथनस्वानच्छाय॥ २
दिगलास चाम्पकी सत्त्वानच्छाय॥ ३॥ गुनिलास चंपस्वान पलस्वान ॥ ४॥

४८ लस्वान् कृय ॥४॥ यन लास वृषतकास्वान् कृय ॥५॥ कर्ति लास वधूतिस्वान् कृय
य ॥६॥ कार्त्तिकस कासिवृक्षय ॥७॥ धिलाम् वालपत्र कृय ॥८॥ प्रोसलास
गुलरी कृय ॥९॥ माघस दशालस्वान् ॥१०॥ विगलास गुडीलस्वान् ॥११॥ च
गुलाम् भूरुषा कस्वान् कृय ॥१२॥ धनः मासमासया स्वान् कृय ॥१३॥ धनं लि
गुच्छकालिया नैमिषिकपूजायास्वान् कृय ॥१४॥ मालरीयथिका वैव दमनं क ४८

शुक्लान् कं। कनू४ कं कनूव कं भूस्वानं पाटली गथा ॥ नवमालिकार्क पूषं च तथार्थ
वागिमूक कः ॥ न कादरुषी गानि सदा कृम मानि वनाने ॥ दया नि उगदं वाये न
नैमिषिकार्चन ॥ जीलस्वान् डिथिस्वान् धडान् स्वान् वरहसिया वृ प्रयुक्ता
लतस्वान् क्रायुक्ता लागस्वान् सवलस्वान् पातलिस्वान् नवल्लि अर्क
त माधवी धन डिमकुतास्वान् नैमिषिकपूजास गुच्छकालिया म

४२ य॥ ॥ लवचूजमरलो॥ दधुचैवजवापुष्पं पट्टवमुरुलंलरु॥ वृक्षहृत्पा
दिकंपापं दत्तान्नधमिनिधयः॥ जितरुतस्वान क्कायाया पातवमुक्ता
यारुललाजिडा वृक्षहृत्पादिपापं नगुवारनंनाशयिडा निधयः॥ ॥
भूपनायातुमाहात्म्यं मया वक्तुं न शक्नुते॥ ॥ ठवतायादिगुर्धं पृथ्वी दशा
तुक्ते प्रपनाजिता॥ श्रीमहादेवन आकाशकल अरुनागिस्वानयाम ४२

हिमाजिनकायमरुयाधकं आकाशकल गाय अरुनागिस्वानकायाया
इगनक्तिपूज्य हाव अरुनागिक्कायायापुंथ॥ ॥ अथकाम्यं॥ कामना
विराषपुष्पं विरक्षपं॥ तथावाकं हानावगनु॥ मालतीकुसुमेर्द्वीवार
गीसत्त्वप्रदायका॥ वक्षगः सूर्यमहीपाला जातीपुष्पेर्न संशयः॥ मध
सूर्यधिकारिश्च नृपत्वनागकक्षत्रैः॥ माधवीरिर्महीपाला हर्म

५० राखचंपकेः॥ अतिमूर्केर्वृद्धिद्विः स्मृद्वित्रिकादिर्धनागमः॥ कृन्तेः कीर्तिम
वाप्नोति वन्धुकेर्वान्धवप्रियं॥ ऊवापूष्पननिपवः संकयंथानिगल्दभागा॥
पद्मनायनवाप्नोति कृमूदः कविताएव॥ कदम्बेव्योधिनाभं स्यादस्त्रे
नेर्वृद्धिरागरवरा॥ जयः प्राप्तिः कृन्तवकेर्गजलारकृन्त० केः॥ तथापनाजि
जापूष्पेर्वृवत्सर्वोऽसूदनः॥ सहालिकाप्रसूननः पूगलारः प्रदक्षरा॥ १४५ ५०

कहानि वरभाकेन वकूलेः कूलमान्यता॥ हर्षयाधनधान्यानि भाल्म
ल्याः अग्रवः कथाः॥ आनपूष्पभानलाशः वकपूष्पेर्जनागमः॥ वा
इलारख्यपुन्यारणेः कर्तुकात्रेर्वृद्धन्ननिः॥ दीर्घायुत्वप्रदाल
नः गगनेः सर्वमान्यताः॥ पलाशकूस्मैर्ददेवी वृद्धरा २ आर

५२ अवापुष्पस्य॥ अश्वत्थवक्रादित्वाहं वृक्षहस्तादिपापमूककामः नृरिर्कुवा
 पुष्पेष्टीगुक्कालीद्वीमहंपूयिष्प॥ धर्मजित्वालस्वानयावाक्॥ ॥ अ
 थकामनावि^रक्षप्रपूष्पवि^रक्षप्रवाक्॥ मालतीपूष्पस्य॥ वागीभत्वरुल
 प्राफिकामः॥ हर्षजित्वालस्वानयावि^रक्षप्र॥ अश्वत्थपक्षत्वं प्राफिकामः॥
 यथिकापूष्पस्य॥ मध्वत्वरुलप्राफिकामनृरिः॥ जीधित्वालस्वानया॥ ना ५२

गकठानस्य॥ अश्वत्थपक्षत्वरुलप्राफिकामः॥ धर्मनृपकठानस्वानया॥ ॥
 चंपकपूष्पस्य॥ अश्वत्थमप्राफिकामः॥ धर्मचंपस्वानया॥ ॥ माधवीपू
 ष्पस्य॥ अश्वत्थमहीपालत्वं प्राफिकामः॥ धर्मगुडीलस्वानया॥ ॥ अग्निमू
 कपूष्पस्य॥ अश्वत्थवृद्धिद्विकामः॥ माधवीस्वानयावाक्॥ ॥ मल्लिका
 पूष्पस्य॥ धनागमप्राफिकामः॥ धर्मचंपलीस्वानया॥ ॥ कंदपूष्पस्य॥

५३ कीर्तिरुलप्राप्तिकामः॥**धर्मद्वारालम्बनयाधर्मः॥** ॥वन्धूकपूष्पस्य॥वा
न्धवप्रियत्वरुलप्राप्तिकामः॥**वन्धूलिम्बनयाधर्मः॥** ॥उवापूष्पस्य॥
॥**कृदयत्तकामः॥** ॥**जिह्वालम्बनया॥** ॥पद्मपूष्पस्य॥आयुर्वृद्धिप्राप्ति
कामः॥**पलम्बनया॥** ॥कुम्भदपूष्पस्य॥कवित्वकामः॥**धर्मवज्जालम्बा**
नया॥ ॥कदम्बपूष्पस्य॥वाधिनालत्तकामः॥**धर्मकदम्बयावू॥** ॥अ ५३

लम्बनपूष्पस्य॥वृद्धिवृद्धिप्राप्तिकामः॥**धर्मसचलम्बनया॥** ॥कुन्तवकपूष्पस्य
॥अश्रुयप्राप्तिकामः॥**अश्रुकोलम्बनया॥** ॥कुन्तपूष्पस्य॥गजलार
त्तकामः॥**काउकोलम्बनया॥** ॥अपनाडिनापूष्पस्य॥अश्रुसर्वोद्गम
नत्तकामः॥**अरुनागिम्बनया॥** ॥सरुलिकापूष्पस्य॥अश्रुपुत्र
लारत्तकामः॥**पानिजालम्बनया॥** ॥अरुल्लकपूष्पस्य॥अश्रुल्लक

५४ हानित्वकामः॥**अश्वकस्नानया**॥ ॥वक्त्रपूष्पस्य॥**अश्वकलमान्प्रप्राप्तिका**
मः॥**वक्त्रस्नानया**॥ ॥दूर्वायाः॥**अश्वधनधन्यादिप्राप्तिकामः**॥**गुलगुया**
॥**अश्वलीपूष्पस्य**॥**अश्वहानिहानित्वरूलप्राप्तिकामः**॥**सिमलसियावू**॥ ॥
दाक्षपूष्पस्य॥**अश्वः**॥**अन्नलारत्वकामः**॥**वृषगकास्नानया**॥ ॥**वक्त्रपूष्प**
स्य॥**अश्वः**॥**उनागमत्वकामः**॥**वक्त्रकानपूष्पकाश्चमक्ति**॥**वाहलर्धं**॥ ५४

स्नानकाशीसदृश॥सूक्तं दत्तात्रेयस्नान॥ ॥पूनागपूष्पस्य॥अथनाश्रुत्ताहकाम॥वा
सियावू॥कर्णिकानपूष्पस्य॥अथवदन्नमित्त्वकाम॥वगहलवू॥ ॥पठालपूष्प
स्य॥अथदीर्घायूषाफिकाम॥पातुलस्नानया॥ ॥तगनवपूष्पस्य॥अथमान्य
तारुलप्राफि॥तगलायस्नान॥ ॥पलासपूष्पस्य॥अथरुग्ण॥इजादिकावद
प्राफिकाम॥लाहसिवू॥ ॥क्षितिषपूष्पस्य॥अथमृदालाहकाम॥मलवा

५५ कलयात्र ॥ ॥ उयनी पूषास्य ॥ अशुभ उयनी फीकाम ॥ लक्ष्मीस्नानया ॥ ॥ कनवीन
पूषास्य ॥ अशुभ मनुसिद्धि प्राफिकाम ॥ कक्रे अलस्नानया ॥ ॥ विल्वपत्रस्य ॥ अ
शुभ नमो गति प्राफीकाम ॥ व्यालपत्रया ॥ ॥ एरिनमूकपूषः श्रीगुच्छकोली
द्वीमहं पूजयिष्या ॥ निसर्वत ॥ धर्मसमस्तस्नानया वाक् सतय ॥ श्रीसिद्धि
लक्ष्मी चैनपितदवरुल ॥ अशुभ श्रीसिद्धिलक्ष्मी महं पूजयिष्या ॥ धर्मविराग ५५

श्रीसिद्धिलक्ष्मी यातस्नानच्छायाया रुल श्रीगुच्छकालिया तच्छायाया रुल उर्ध्व ॥ ॥
सात्विक कामनास नायस्नानप्रशस्त ॥ ॥ उच्चाटनस वक्षी कनकास प्रीति याय
थास वै निजयलपस नमाक काउस्नानप्रशस्त ॥ ॥ माहनस मुक्तारस ययु
स्नानप्रशस्त ॥ ॥ अरिचानस हृषयायस मानकास हाकस्नानप्रशस्त ॥ ॥ अ
थनिषिद्धानि ॥ महाकालसंहिताया ॥ तुलसीरिनपामा र्जधूमनः सिन्धुवानकैः ॥

५६ अर्कपुष्पकोष्ठः नैवद्वीः प्रपूजयन् ॥ तुलसी-अपामार्ग-दूधतत्त्वान् वासि
 चालि-अर्कपात-ध्वजस्नान-द्वीगुक्ककालीपूजायाय-ममउ-कामनास ॥ ॥
 अथ दक्षिणकाल्याः ॥ कालीतनु ॥ नामा पहानवलिरिर्नोपूष्पमनानमः ॥ अ
 पामार्गदलेरुं रं-सुलसीवर्जितः शुरः ॥ पूजनीया सदा रक्ता नृणां श्रीधर
 लाफय ॥ ॥ दक्षिणकालिपूजायाय-एकिन-अनकउपचानम-अनकली ॥

रु-स्वस्तुन-अपामार्गेन-लीमनाजन-तुलसीइवममउ-शीघ्रनरुललाययातध
 नः पूजायाय-मनूष्यपनिमन ॥ ॥ तथा मूढुमालाननु ॥ पूष्पाक्षपितरथादशा-द्वय
 कृष्णासितानिच ॥ एवतपूष्पंजवापूष्पंकनवीनं-तथाप्रिय ॥ तगनंमालनीजारी
 सवनीयूथिकारथा ॥ धूसूला ॥ कवकूलएवतकृष्णपनाडिताः ॥ वकपूष्पैवि
 ल्वपगुं चंपकं नागकठानं ॥ मल्लिकागिरिकाचिंवी-नकंयत्प्रनिकिर्दितं ॥ अ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५७

कर्कपूष्पांकाकक्षदं चर्वनश्च प्रियं सदा ॥ अक्षुम्पाश्च विलम्बधनः गुष्टा एव निकालिका ॥
 पद्मपूष्पभनकं लसंतुष्टा सर्वद्वयता ॥ कृष्णा वायुदिवा शुक्ला कालिका वनदा एव
 त् ॥ ४४ ॥ अक्षानधूस्तुलनेव गुष्टा धूमावती पना ॥ वान्यपूष्पेऽथ विविधेः गुष्टा एव तिप्पा
 द्येती ॥ नानास्वानः जातिः नाना उपचानः हाकूययस्वानः डिगल्लस्वानः केनवी
 नस्वानः तमनायः जीलस्वानः जाती जीलस्वानया विलम्बः सवंगीः डिधिस्वानः इधल ५७

ॐ सर्वेदा॥ अमल

५७

53

स्नानं अथ ॥ १ ॥ चक्रलस्नानं ॥ २ ॥ अथ भूस्नानं ॥ ३ ॥ अथ पद्मस्नानं ॥ ४ ॥ अथ
लपत्रं ॥ ५ ॥ चंपस्नानं ॥ ६ ॥ नृपक्षं ॥ ७ ॥ स्नानं ॥ ८ ॥ चंदनीस्नानं ॥ ९ ॥ सिंधिस्नानं ॥ १० ॥ चिंवीक्षयास्नानं ॥ ११ ॥ का
कस्नानं ॥ १२ ॥ अर्कपातस्नानं ॥ १३ ॥ कादूवडीलस्नानं ॥ १४ ॥ वनस्नानं ॥ १५ ॥ कालियासदांप्रिय ॥ ॥
॥ १६ ॥ नयाइधलस्नानं ॥ १७ ॥ श्रीधूमावतीदेवीसंगुष्टकल ॥ १८ ॥ वनसहाउ ॥ १९ ॥ नानास्नान
नं ॥ २० ॥ धूमावतीदेवीसंगुष्टकल ॥ ॥ २१ ॥ भूस्वलहलन ॥ २२ ॥ पार्श्वतीसंगुष्टकल ॥ ॥

५८ अकियामल ॥ सावित्री अरुवानी अरुर्त्तदनी सनस्वती ॥ योर्त्तये तुलसी पुरः स
र्वे कामः सुसिद्धिः ॥ सावित्री अरुवानी दूर्गा देवी सनस्वती धर्मदेवी स्वर्ग
सन तुलसी पुरन पूजाने अकिया ममस्त कामनां सिद्धिः ॥ ॥ तथा नी
लसन स्वर्गा ॥ गथा अकं नीलरक्त ॥ अष्टमी चतुर्दशी पूजयेत् यथा वि
धिः ॥ आरु सिद्धि मवाप्नोति उवा पूष्य चतुर्विंशती ॥ चन्दनं चार्कं च सुमं दश ५८

कुंठापना जिता ॥ वंधूक मालया गुष्प ॥ गृथा कृग प्रदान वत् ॥ अर्घ्यं दद्यात्स यत्न न निग्न
पूजा सुमर्चदा ॥ गवक्षसन नीलसनस्वती पूजायात अष्टमी चतुर्दशी कृद् विधि रथ
अकन आरु सिद्धि लायुता ॥ जिगला लस्वान चतुलस्वान श्रीखलु अर्क पात गा
युता अरुना निस्वान धर्मकायान अग्नि संतुष्ट इयिता ॥ वंधूलिस्वान मालाका
यानं अग्नि संतुष्ट इल गथ दुगुदय का व वलि विद्यान कवी संतुष्ट इल अ

पर

॥ धनं ॥ नित्यपूजासमर्थः उत्तमपूर्वकनः सदादिविद्यमानः ॥ ॥ मत्स्यसूक्तं
॥ पूष्पः शुद्धिकाकनदं वधूकं भगपतुके ॥ द्वितीयं वर्धनां चैव कश्चिन्नात्र दयैरा
था ॥ वकमंदानचूगानिकनचीनालिचैवगु ॥ सधिकात्रितयंचापि क्षोमपू
ष्पउयनिका ॥ नित्यपुष्पं कनूवकं मूनिपूष्पं च कक्षनं ॥ वासंती द्वितीयं च
व काष्ठापूष्पं मनूवकं ॥ दमनं च लवंगश्च यूथी सखालिका गथा ॥ सुगन्धि

पर

नेताजगं सूकंदनाउस्वान

॥ तलाहिलेः कसमं न चैयतूकले ॥ ॥ स्नानया शुद्धकादूचउलस्नानवधू
लिस्नानपलस्नानवधुलस्नानभगाजगं वदहलसियात्र अपमायावील
कनवीनस्नाननिभूलस्नानस्वताजगं पातकास्नानलक्ष्मीस्नानव्यालपुत्र
कालतस्नानमूनिपूष्पधियास्नाननूपकक्षनस्नानमाधवीस्नाननगां का
शिवममसवधुजानस्नानलवदस्नानडिथिस्नानपालिजानस्नानन

पुष्पसूक्तं

६० साकतायुस्वानदको. नसाककादुस्वानदको. ध्वग. स्वानननीलसनस्वती
 पूजायाय. कूलद्वयनंपूजायाय ॥ ॥ अथ निषिद्धानि ॥ विष्मकित्रत्न ॥ गु
 लसीमालतीपूष्पं. चर्कयगुलसीदलं ॥ गुलसीमता. जीलस्वान. नीलसनस्व
 तीयातमगता ॥ ॥ ॐ निनीलसनस्वत्पा ॥ ध्वगनीलसनस्वतीया ॥ ॥ अथ
 उद्घोष्नायस्य ॥ नामकध्वनतनु ॥ संदोनपानिजातं च. वधभसोराग्यदाय ६०

कं ॥ पीतजातीसर्वकालं. विरक्षसमृद्धि^{रुद्र}हिता ॥ खर्जनपूष्पजातीच. कूलसीवृद्धि
 दायकं ॥ वंधूकंभाद्रसोराग्यं. ऊषाचटिपूनाप्रिय ॥ उत्पलंधनवृद्धिच. पद्मं
 पृष्टिकमवच ॥ पूनागंसर्वसंपत्तिं नकैकंधनहानिकं ॥ कक्षायाक्षासिद्धिं
 चकंगकीचविवर्धयता ॥ मूलतंनिःशूलंशूलयं. मल्लिकाइः खदायदा ॥ चं
 पकंपूवकाभगु. प्रिसंध्याइः खभाचका ॥ डोनभाद्रमवाप्रागिभवनीर

देव सर्वसिद्धिदा॥ सखालिका जयकनिकर्तुका ~~सर्वसिद्धिदा~~ वृद्धिदायि
 का॥ कर्मदं प्रीतिदं चैव सुदं न धनप्रदं॥ कुरुं० सिद्धिसौख्यं नीलद्वयं तु
 हानिकं॥ दमनं सर्व सर्वपेक्षिं विल्वपत्रं पत्राप्रियं॥ निर्गन्धं त्वत्कटारं
 न्यश्चर्वजं यच्च कपूजनं कृष्णपत्राजितामृत्युः सुगमालातयेव च॥ मञ्जि
 कामसंज्ञाया दूःखदा मृत्युदा सदा॥ मिंरी वाधिप्रदा चैव कथयूक देव

चरहानिकं॥ किमियुक्तं महाहिनिना जदगुं महर्ह्यं॥ वृत्तं तत्पुष्पमाहात्म्यं
 ज्ञात्वा श्रीप्रिपनां यजत॥ ॥ ध्वजत्वनयामहिमाभियाता विवानयाता
 जः श्रीप्रिपनादवीपूजायाय॥ ॥ संकल्पवाक्॥ मंदानपूष्पस्य॥ अथवस्थ
 सौख्यं रत्नप्राप्तिकामं हरिर्मेदानपूष्पः श्रीमहाप्रिपूनसुन्दरीदवीमहं
 पूजयिष्य॥ ध्वजवक्त्रसि वृथावाक्॥ जीतजानीपूष्पस्य॥ अथसंस्कृतकामः

६२ प्ररिः प्रीतजातीपूष्पैः श्रीमहाविपुनसून्दरीदवीमहंपूजयिष्य ॥ जूतील
स्नानयावाक् ॥ ॥ खईनपूष्पस्य ॥ अश्विष्टीवृद्धिकामप्ररिः खईनपूष्प
श्री ॥ खईनयाव ॥ ॥ जातीपूष्पस्य ॥ अश्वकूलम्हीवृद्धिकामप्ररिः जातीपूष्प
श्री ॥ जीलस्नानयावाक् ॥ ॥ कन्दपूष्पस्य ॥ अश्विष्टीवृद्धिकामः प्ररिः कंदपू
ष्पश्री ॥ धर्मदाशालस्नानया ॥ ॥ वन्धूकपूष्पस्य ॥ अश्वमादरुलप्रा ६२

फिकामप्ररिः वन्धूकपूष्पैः श्री ॥ वन्धुलिस्नानयावाक् ॥ ॥ ऊवापूष्पस्य ॥ अश्विष्टी
विपुनाप्रिमिकामप्ररिः ऊवापूष्पैः श्री ॥ ऊवापूष्पस्य ॥ अश्विष्टीवृद्धिकामः प्ररिः ऊवापूष्प
श्री ॥ ऊवापूष्पस्य ॥ अश्विष्टीवृद्धिकामः प्ररिः ऊवापूष्पश्री ॥ धर्मदाशालस्नानया ॥ ॥
पद्मपूष्पस्य ॥ अश्विष्टीवृद्धिकामः प्ररिः पद्मपूष्पश्री ॥ पद्मस्नानया ॥ ॥
पूनागपूष्पस्य ॥ अश्विष्टीवृद्धिकामः प्ररिः पूनागपूष्पैः श्री ॥ धर्मदाशाल

६३ सिन्धु॥ ॥कलादपूष्पस्य॥अशालाससिद्धिरुलकामन्त्रिःकलादपूष्पः॥
 धनकलादस्नानया॥ ॥कनकीस्नाननिषिद्धकायमनः॥ ॥चंपकपूष्पस्य
 ॥अशपूष्पप्राप्तिकामन्त्रिःचंपकपूष्पः॥चंपकस्नानया॥ ॥मृदूलपूष्पनिषिद्ध
 कायमनः॥ ॥प्रिसंधापूष्पस्य॥अशःखभावनरुल॥प्रिसूनस्नानया॥ ॥
 धासपूष्पस्य॥अशभाद्रकाम॥वृषनकास्नान॥ ॥सवगीपूष्पस्य॥अशसर्व ६३

सिद्धिरुल॥सुअतिस्नानया॥ ॥सुखालिकापूष्पस्य॥अशऊयप्राप्तिकाम॥ध
 नपालिकानस्नानया॥ ॥कर्णिकानस्य॥अशवृद्धिरुल॥वदहलसिन्धु॥ ॥
 मूकदस्य॥प्रीतिप्राप्तिकाम॥चउलस्नानया॥ ॥सुदर्शनपूष्पस्य॥अशधन
 वृद्धिरुल॥चिकिचिकियावू॥ ॥कून्कुकस्य॥अशसिद्धिसौख्यरुल॥का
 लानस्नानया॥ ॥दमनस्य॥अशसर्वसंपत्तिरुल॥धनस्नानया॥ ॥

६७ हाकुस्वानशकनिषिद्धकायमगज॥ ॥विल्वपत्रस्या॥अथपनमघ्रीतिरुल॥१८
 व्यालपत्रयाथ॥ ॥अग्निनक्षत्रास्वाननिषिद्धगन्धहीनगुलिननिषिद्धकायमग
 ज॥ हाकुअरनामिस्वानया॥मृगपूरुल॥८॥चंवेलीस्वानयाइःखमृगपूरुल॥हा
 कूकीलनस्वानया॥वाधिरुल॥संगुनशकस्वानकायान॥हानिरुल॥की
 लनशकस्वानकायान॥नाउदगुयाहया॥ ॥अथविल्वपत्र॥ज्ञानार्थुवा॥ ६७

अवापूषेर्महानिपूर्ववत्पूजयच्चिवा॥मासमावृत्तहंश्वपातकंभतउर
 न्नकं॥मोरागधवात्तवंमन्त्री॥शिपूनायाःप्रसादतः॥विधिरथपूजायाका
 ७॥जिगशालस्वान॥लक्षिताकायान॥भतच्छिऊन्ननयाकापापनाभश
 यि७॥क्षीतिपूनसूदनीयाप्रसादनमोरागधवंगंइयि७॥ ॥१४४॥
 पूषेर्महानि॥महर्हिःपूजयन्ननः॥नाभयस्पातकंसर्व॥मास॥

दृष्टं मातृप्रपूजनात् ॥ शिलाकं व भगंतस्य सर्वपापं दह दधः ॥ गायस्त्रानन लक्ष्मिणा
पूजाया हान समस्त पापं नाशकं यिउः स्वगुलिलाकं ध्वस्तया व भक्त यिउः श्री
विपूनसूदनी पूजाया क कया ॥ ॥ विल्वपत्रे च जलजे सत्पुनपनिपूर
ऊयत् ॥ पूर्ववत्पुनमभनि मासमागं प्रसन्नधीः ॥ समृद्धिवा न्त्वं नमस्ते
सर्वपापं हनत्सदा ॥ ग्वस्तसन सत्पुन विपूनसूदनी व्यालपत्रन पूजा दृष्टं

याग पलस्त्रान आदीन लंखसजायल पूस्त्रानन पूजाया ग लक्ष्मिणा विधि
थया काउः उक्तया समस्त पापं नाशकं यिउः समस्तं वधय रयिउः ॥
मन्त्रिकालगी जाती कून्दे च भगपुत्रकैः ॥ एवमात्पलसूक्ष्मी गेष्ठ पूज
थन्मासमागं कं ॥ कलाचान कुमनेव पातकं भगजन्म कं ॥ वृक्ष हत्पादि
ऊनिगं नाशयन्नात्संक्षयः ॥ मुक्तिगस्य कनद्वी वाचा जीवसभा एव

३२ तू॥ चंपलीस्नान-जीलस्नान-जीलस्नानयाविष्ठाप-जातिध्यागुलि॥ द्वाशालस्ना
न-पलस्नान-चउलस्नान-ध्वगस्नानन-ग्वक्षसनकूलायानक्रमन-लक्षि
तापूजायाग-उक्षयाभगच्छिउत्तमनयाकापापनाश-वृक्षहृत्पादिघापं
नाशइच्छिउ-सन्दहकायमस्वाला॥ मूर्किं **ध्वक्षनल** यिउ॥ वृहस्पतीः
यावचनस्थवचनइच्छिउ॥ ॥ भृगुमूपागवंधूक-उवानकासलेः ॥

प्रिय॥ पूर्वक्रमहासंपूज-मासमकंप्रसन्नधीः॥ पागवंनाशयमंगी-साक्षा
त्कामसभाएवतू॥ काठिव-धलिस्नान-उशालस्नान-काउचउल-ध्वग
स्नाननग्वक्षसन-प्रिपूनसंदनी, लक्षितापूजायाग-उक्षयापापनाश
इच्छिउ-साक्षागुकाभद्वर्थसंदनीइच्छिउ॥ ॥ चंपकः पाटलेद्वि
वकूलेनागकक्षेत्रः॥ लकूचः सिन्दूवानेध-पूजयत्पूर्ववगुक्रमागु॥ ॥

७० सो रागधमगुमंगस्य मासमागुमंगजायते ॥ प्रापं विना भयं द्वि वि यदि ऊन सह स्र
 कं ॥ **यं रागधम** पागलिस्वान् कालगस्वान् नूपकधनस्वान् वगहलसियाव् वा
 सिधालि ध्वगस्वान् न जापाधाडाडागुलिकथनं स्वक्लसनलक्षिणापू
 जायागः डाक्कयादालक्षि ऊननयाहापापनाहाइयिडा ॥ अगुलसो रागध
 लायिडा ॥ डाक्कन ॥ ॥ **ध्वगं लि** श्रीप्रिपूतसुन्दरीयाग क्कयमगडा स्वान् ७०
 धाय ॥ ॥ अथ निषिद्धानि ॥ वा नाहीगन्तु ॥ पलाहाकाहाक्कसुमैनाभय

दूनगस्त्रऊग ॥ धर्मीगमालऊः पगु सुलसी दिगये सुथा ॥ पूऊनात्पाटवीव
 स्मा दिंद्रस्यापिहन्न क्रियं ॥ प्रिपूनापूऊनवर्कगुलसी सर्वदावूर्ध्वः ॥ गुंघाहा
 मागं न कूहाएवगिसुन्दरी ॥ लाहासिव कासिवून प्रिपूतसुन्दरीपूजाया
 यमगडा गाळूननं गालगमाल ॥ अंवलहल गमालपूण नंता जाग गुलसि
 ध्वगन प्रिपूतसुन्दरीपूजायाहान पापीइरुडा ॥ ००० इलसां संपद्दिनाभ

७९ इयिडा ॥ ध्वज निमिद्धिनः क्लृप्ता नीपनिस्तनः प्रिपूनसुंदरी पूजा यायसः तुलसीता
 लभः मालः तुलसी यागः न्यः मातुनः प्रिपूनसुंदरी तम वा ७७ ॥ कोलालवीया ॥
 ऐनवीः सुन्दरी तानाः वृक्ष विष्णु विवस्वतां ॥ तुलसी वर्जिता पूजा सा पूजा
 रुलदा भवतु ॥ अग्रः ऐनवीः सुन्दरी तानाः प्रसंगः वृक्ष विष्णु विवस्व
 तां पूजा तुलसी वर्जिता पिरुलदत्तार्थः ॥ ननु केवलं वृक्ष विष्णु दिपू ७९

७९ अम ॥ तं प्रसाद स्वगच्छनं तुलसी निषधम् ॥ दिव्यवीजं पिबूनिता ॥ एकसुधा
 सुवपि ॥ ऐनवी सुन्दरी ताना ॥ ऐनवीः प्रिपूनसुंदरी ताना ध्वजद्वीडा नापः
 वृक्षा विष्णुः सूर्यः ध्वज या पूजा स तुलसी मदयक पूजा यागतां सुररुल
 विडा पूजा इयिडा ॥ ॥ धनवचन विनाय ॥ वृक्षा विष्णु सूर्य ध्वज
 या पूजा स तुलसी दयक माल तुलसी मदयक पूजा याय मगडा ध्वज
 स्वक्त या पूजा स तुलसी दयक माल तुलसी मदयक पूजा याय मगडा ध्वज ॥ १ ॥

७२ गुलिकावस्थाः ऐनवी. त्रिपुनसुन्दरी. ताना. ध्वस्वक्रयाप्रसंगपूजास. वक्रावि
 ष्णुसूर्यस्वक्रयागं. गुलसीमदयक. पूजायागसां. सरुलविडा पूजाइला॥ केव
 लवक्राविष्णुसूर्यपूजास. गुलसीमगडाभखा॥ मानस्वग. तनुसंथर्धधयाडा
 गला॥ ताना एकसुधार्धवगंरुसं. थर्धधाला॥ दिव्यमार्ज्या. वीनमार्गया इ
 कागुलसीनिषिद्धधकंज्ञाडागला॥ ॥मल्लिकाइः खदायिकागूणि॥ चंव ७२

नीस्वान. त्रिपुनसुन्दरीयाग. क्वायान. दूःखरुलधकं. डुडान. ज्ञात. कवल
 चंवनीमागनिषिद्धमगडा॥ ॥मल्लिकामालगी. जागि. कुन्देध्वगनपगुके
 :॥गूपादि॥ ॥ध्वगुलिवचनस. चंवली. जीलस्वान. दाखानस्वान. ४
 तपद. चडाल. ध्वगस्वान. समूहयाडाडा. त्रिपुनसुन्दरीयागक्वाय
 गडा. काम्यविराम॥ ॥अथपूष्यनहस्या॥ नहस्यकक्षालिन्या॥

७३ अथ पूष्पमाहात्म्यं लक्ष्ममातुवदाम्यहं यद्वात्मासाधकः सिद्धिर्लेहेनूनं
न संशयः ॥ महादेवन आह्लादय कलस्वानयामहिमा लक्ष्ममातुश्च
क्लायस्वानयामहिमासयाडाः स्वाननदवीपूजायाकक्कन समस्तसि
द्धिलायिडा निश्चयं न चूं संदं मूत्वा न ॥ ॥ चंपकस्यप्रदानन स्वर्ग
वद् विधे रवतू नागकीर्तनेदानन रूपवान्सूर एव रवतू ॥ पुननाग

पूष्पदानन कलक्षानि रवत्सदा ॥ कक्षनस्यप्रदानन क्षुद्रना एव दुर्वं ॥ पानिजा
नं पानिरदं दानेनायुः प्रवर्द्धनं ॥ कूंदपूष्पप्रदानन काममाप्नोति वैश्रवं ॥ मा
लतीजाति कुकुब्ध शीघ्रं गुष्पनिमातनः ॥ का किलारवाप्रदानन कका
लं मनर्हं नतू ॥ द्रोणपूष्पप्रदानन गुष्पनपनमध्वनी ॥ यथा कृष्ण
दिवलिनास्तथा गुष्पनिनिष्ठिता कनवीनलपूष्पलपूजय कृगदीध्व

७४ श्री ॥ प्रतिपुष्प प्रसंगः आ ऊयि त्वानिष्ठासुखे ॥ लक्षणं वांछिता कामानां सा सिद्धि
 लक्ष्यं लक्षणं ॥ लाहिता वापनका वा कनवीनम्भु सिद्धिदः ॥ वंधूकस्य प्रदारे
 नन पदवम्भु लक्षणं ॥ अपना जितायामात्म्यं नैव लक्ष्यं वीम्यं हं ॥ अ
 पना जिताया अन्याम्भु प्रिया दव्यानविद्यं ॥ अपना जिताया पशु तु स्त्रि
 ताः पूर्वक्षरं समा ॥ आनि नूपं तु सा स्त्रि त्वा गतां गच्छतीति वा ॥ कनवीना ७४

लिङ्ग रूपः शिवा वसति वे सदा ॥ शिवक्षक्य लक्ष्यं संयागः कनवीनापना जि
 ता ॥ नकचन्दनमिच्छुर्नैत आर्थ रगुन पूजयेत् ॥ गुष्पमपनमक्षानि साः
 पूजा सरुला स्मृता ॥ पुष्पे न नक्ष संरुतः पशुर्वोगिनि संरुव ॥ स्वानाभा रुव
 पुष्पे वोगि संरुव लक्षितः ॥ लक्ष्यं पशुः ककु के वी पूजयेत् वांछितं पुदं
 ॥ अपर्युषित निष्छिद्र प्रादिने ऊ गुवर्जितः ॥ आत्मानाभा रुव वीपि पुष्पः

संपूजयच्छिवां॥ कमलैः सिनसालेष्ठवा ऊपय रूलं लहेतु॥ विल्वपत्रवसं पूज्य म
 शुल्लेष्ठवनगां एवत॥ नीलात्पलैः सर्वकामान्कूमरैः कामवान् एवत॥ सर्वेष्वपि
 वपुष्पेषु पलाशं शुभमूच्यते॥ अरुणकः अरुणकहृत् २८॥ देव्या प्रीति कने पने॥
 नैस्तु उपपत्तुं लक्ष्मि सिद्धिदायकं॥ यकना सिद्धिदावत्सः तान् वक्ष्ये ८८॥
 तत्त्वतः॥ वक्ष्यामि मिहा कनः सर्वेष्वपि यच्छृणुं तत्त्ववत्समसिन विष्णुना ७७

हस्त्यं ॥ २५
 कषुद्रं लक्ष्मि॥ विनाश किं नक्षत्राणिः स्थानवाशकिः प्रसीदति॥ गत्मा च कृत्वा चित्तैः शक
 पूजां कुर्याद्विचक्षणः॥ अर्चयन् विषयैः पूष्ये सुगुदक्षान् नम्या एवत॥ अहिं
 सापनमं पूष्यं पूष्यमिन्द्रियविग्रहं॥ दद्यात् पूष्यं धर्मं पूष्यं ज्ञानं पूष्यं च पंचकं
 केसुत्रीकं कर्म चैव कर्पूनां कमलं कुलं॥ केकांलं पंचकं चैव देवता प्रीति
 तानकं॥ ॥ अथ वाक्॥ चंपकान् कायया वाक् ॥ अथ त्वं पुनरुल्लस्य प्राप्ति

गमः त्रिः चंपकपूष्पः श्रीमहाविपुलसुन्दरीमहंपुञ्जशिष्यः ॥ धनं च स्वानया
 ॥ वक् ॥ नागकक्षनस्य ॥ अथ नृपकत्वप्राप्तिकामः त्रिः नौगकक्षनपूष्पः श्रीः ॥ नृप
 कक्षनस्वानयावाक् ॥ पुन्नागस्य ॥ अथ हनननिकामः त्रिः पुन्नागपूष्पः श्रीः ॥ कक्ष
 नया ॥ ॥ पानीजानपूष्पस्य ॥ अथ आयुवृद्धित्वकामः त्रिः पानीजानपूष्पः श्रीः ॥ वक्
 सिवूया ॥ ॥ पानीरुद्रस्य ॥ अथ आयुवृद्धित्वकामः त्रिः पानीरुद्रपूष्पः श्रीः
 ॥ निपवू ॥ ॥ कुन्दस्य ॥ अथ सर्वप्राप्तिकामः त्रिः कुन्दपूष्पः श्रीः ॥ दाशालस्वान

१४. ५१. ६१. ७१. ८१. ९१. १०१. १११. १२१. १३१. १४१. १५१. १६१. १७१. १८१. १९१. २०१. २११. २२१. २३१. २४१. २५१. २६१. २७१. २८१. २९१. ३०१. ३११. ३२१. ३३१. ३४१. ३५१. ३६१. ३७१. ३८१. ३९१. ४०१. ४११. ४२१. ४३१. ४४१. ४५१. ४६१. ४७१. ४८१. ४९१. ५०१. ५११. ५२१. ५३१. ५४१. ५५१. ५६१. ५७१. ५८१. ५९१. ६०१. ६११. ६२१. ६३१. ६४१. ६५१. ६६१. ६७१. ६८१. ६९१. ७०१. ७११. ७२१. ७३१. ७४१. ७५१. ७६१. ७७१. ७८१. ७९१. ८०१. ८११. ८२१. ८३१. ८४१. ८५१. ८६१. ८७१. ८८१. ८९१. ९०१. ९११. ९२१. ९३१. ९४१. ९५१. ९६१. ९७१. ९८१. ९९१. १००१.

या ॥ ॥ कुवुपूष्पस्य ॥ अथ दवीसंतापकामः त्रिः कुवुपूष्पः श्रीः ॥ रुक्मलस्वा
 नया ॥ ॥ काकिलास्वापूष्पस्य ॥ अथ अकालमृत्पूनाशत्वकामः त्रिः का
 किलपूष्पः श्रीः ॥ काकिलधायस्वानया ॥ ॥ डालपूष्पस्य ॥ अथ श्रीमन
 भवनीसंतापकामः त्रिः डालपूष्पः श्रीः ॥ वृषजकास्वानया ॥ ॥ कन
 वीनपूष्पस्य ॥ अथ सर्वोरीष्टत्वकामः त्रिः कनवीनपूष्पः श्रीः ॥ कनवी

नस्वानया॥ ॥ गवक्षसन-कक्रडलस्वान-काउशलसां-गायूडशलसां-स्वान-
शलपनिं-मंगपजपाडा-नागीस-पनमठवनीपूजायायूडा-गवगुलिकाम
कामनायाग-डागुलिकामनालायूडा॥ आकासिद्विलायूडा॥ ॥ वंधूक
पूष्पस्या॥ अश-पदवसुलारकामनरिर्वंधूकपूष्पेष्टी-॥ वंधूलिस्वानया
॥ रठवतापनाडिताया॥ अशान्विकाप्रितिकामनरिः रठवतापनाडितापू ७७

॥ ॥ गायूअपक्रानिस्वानया॥ कृष्णपनाडितानिषधत्वाकूक्रानुव॥ हाकू
क्रानिस्वाननिषधइडा-कायमनडायाकन॥ गायूडाअपक्रानियाइ
स्या॥ ॥ अपक्रानिस्वानया-महिमा-श्रीमहादेवनक्रायमरुया
आकादयकल-अपक्रानिस्वानस-प्रियइडारथ-भवगाकूंस्वान
गलिगाप्रियमइडा-पनमठवनीया॥ अरुनागिस्वानयाहलस-कडा

स. अतस्त्रिंशत्तां निरूपय्यात्. श्रीपद्मभक्तनीविश्वक. धनंलि. अर
स्वानयाकनपिहविश्वक. कङ्कडालस्वानस. लिंगनूपन. श्रीमहादे
श्वर. कङ्कडालस्वानडा. अरनातिस्वानडा. शिवभक्ति. धनंगासं
याहाडा. नकवन्दननवलाडा. पद्मभक्तनीयापूजायादान. प
भक्तनीसंतुष्टशब्दडा. आगुलिपूजासरुलशयिडा ॥ ॥ वनशास्त्रा

चैतयास्वान. थडाकवयास्वान. गायडा. निरुलस्वान. काउनिरुलर
गायस्वान. रुकुलस्वान. धनआदिस्वाननपूजायादान. वां. अयाहा
रुललाडा ॥ ॥ असिस्वान. चालगदस्वान. कीलइस्वान. धनस्वा
पूजायायमभडा ॥ थडाकवसहाडास्वानन. पूजायाय ॥ ॥ कमलस्व
यवाजपययरुलप्राप्तिकाम. ग्रहिः पद्मपूष्यः श्री. ॥ पलस्वानया

॥ नीलात्पलस्य ॥ अथ सर्वकामनासिद्धिरुलप्राप्तिकामप्रतिनीला
॥ श्रीः ॥ धनं उरुलत्तानया ॥ कुसुदस्य ॥ अथ सर्वकामरुलप्राप्तिका
॥ कुसुदपूष्यः श्रीः ॥ चउलत्तानया वाक् ॥ विल्वपत्रस्य ॥ अथ म
॥ धनं रुलप्राप्तिकामप्रतिः विल्वपत्रः श्रीः ॥ धनं कालपत्रया ॥ अ
कस्य ॥ अथ रक्षकहनगरुलकामप्रतिः अरक्षकपूष्यः श्रीः ॥ धनं ॥ ७८

कैत्तानया ॥ ॥ कामना विरक्षकसः लाहवः ॥ शुष्ठकयमभडा ॥ धनं
नः दवीयाप्रीतियाका ॥ ॥ दवीनमत्तानया ॥ मंगुजपयादानः सम
द्विदशुडा ॥ अथिक्खक्राडाडाकायः कलिङ्गससिद्धिविडागुलिः क
गीगुगुलिसुरक्षयागुलिसमस्तः ॥ कियार्कचादः धगुलिः ॥ किवि
कसतपदुल्लर ॥ ॥ कियदयकनः कूयांसमर्थमदुः ॥ कियदयकनः प

श्री. संतुष्टमइडा. ध्वनिनिमिद्दिन. अकिनसंशकयाडाडा. ॐ ध्वनीयापूजायायमाल. ॥
 हन ॥ ॥ अहिंसापूष. ॐ न्द्रियपूष. दयापूष. धर्मपूष. ज्ञानपूष. ध्व. हातास्वा
 जायाकनन. भी. करुलला ॐ ॥ ॥ कस्तूरी. कंकूम. कपूर. ककाला. ध्व. हाताद
 निडा ॥ ॥ ॐ गिनहस्यकलातिन्यापूषनहस्य ॥ ॥ ॐ नमंशिवाय ॥ पार्श्वपूष
 पूकपूषपूष. प्रणकर्तुस्यहातव ॥ यकृषानिपूषानि. सुरानिकथयस्वमी ॥
 उवाच ॥ पृष्टो हं यत्त्वया देवी मम को गुह्यं हि न तू ॥ कथयामि प्रयत्नेन. लोकानां

गुण

८०

गमया ॥ आषाढस्य गुमासस्य. स्नात्वा कृष्णचतुर्दशी ॥ दत्त्वा पूषासनं तथा नि
 वृत्तत्वा कंतु. गपियां निपनां गति ॥ १ ॥ आश्विनस्य गुमासस्य. अकाशनेलथाननः ॥ अर्चय
 ॥ अश्विन. अश्विनस्य रुलंलर ॥ २ ॥ एतदप्रदस्य मासस्य. अश्विनार्गलार्थय ॥ ३ ॥ हंसध्वजन
 १. विमाननस गच्छति ॥ ३ ॥ आश्विनस्य च मासस्य. अर्कपर्वसु याचय ॥ मयूत्रध्वज
 २. विमाननस गच्छति ॥ ४ ॥ कार्तिकस्य गुमासस्य मसुक्षीने ललापय ॥ अर्च
 ॥ निपूषे सु. ॥ शिवं परमं निन ॥ ५ ॥ मार्गशीर्षस्य मासस्य. कनार्चयति

१:॥ सतेलाक मतिकम्यभांताहं तगगच्छति॥ ६॥ धोषस्यगुवमासस्य धूम्रुत्र
 ॥ चैयगु॥ गुष्टेनसामयादवीलरगपनसंपदं॥ ७॥ मास्यस्यगुवमासस्य ह
 धेनपूजयगु॥ वालार्केक्षयिकेन विमाननसगच्छति॥ ८॥ कालास्यगु
 स्य गन्धनाथनस्त्रापयगु॥ अर्चयद्वापूष्येन वृत्तस्यार्धेननंलरगु॥ ९॥
 चिवनगीमासि नृगुगीननर्धेकने॥ आर्चयद्दरपूष्येन लरद्वदसूव ८७

१०॥ कङ्कडालस्वाननक्षिवयापूजायार उद्वन सा दालकिदानयाद्यारु
 ॥ १॥ यंलास ग्वक्षसन महादव अणामार्गेनपूजायार उद्वन हंसनसंर
 ॥ २॥ दंतया विमानसदकाडो स्वर्गडानिडा ॥ ३॥ ग्वक्षसन कारिंलास अलपार
 ॥ ४॥ वयापूजायार उद्वन कासखानआऊनायादंतया विमानसदकाडो स्वर्ग
 ॥ ५॥ डानिडा ॥ ६॥ ग्वक्षसन कारिंकस श्रीमहादव दीनस्नानयानकाडो
 ॥ ७॥ स्नाननपूजायार उद्वन महादवदधेनयायूडा ॥ ८॥ ग्वक्षसन धिंलान

त पूजा वानं वान याग ध्वज स्वगुलिलाक संवलल पाठा डिगुलिलाक सजनी
॥ प्रोसलान ॥ गमन इल सां इधल स्वानन डिग पूजा याग ओक्क याग डिप्रम
रुया ओ पनम पदलाग ॥ १॥ ग्वक्कसन माघ सास स जित व्याल पगु स्वानन पू
याग ओक्क न कलूडा सूर्य वलु याग जन सं इक्क विमान स दहाडा स्वर्ग
नेडा ॥ ४॥ ग्वक्कसन हलानुन स न साकन साक वमून चिडाडा गयाल
न श्री महादेव स्नान याग कोडा वपग का स्वानन पूजा याग ओक्कन ॥ ७॥ ६३

यावचि सिंहासन कायडा ॥ १॥ ग्वक्कसन वेगु मास स श्री शंकर याग क
न पूजा याडाडा प्पारुन रुयाडा महादेव यागीत या डाडा सनिडा ध्वज
भेदीक सुवर्ण लायडा ॥ १०॥ हल्वं ग्वक्कसन वेसाख स श्री महादेव या
येलेन स्नान याग कोडा गायडा वक सिवून पूजा याग ओक्कन अठवम
रुया डाया रुतलाग ॥ ११॥ ग्वक्कसन तळुलान निप्पु निप्पु धलिन म
देव स्नान याग कोडा पल स्वानन पूजा याग ओक्कन नृपान तडा धरुग

नाडाडा. आनन्दनवानिडाइलाधकं. श्रीमहादेवन. पार्वेशियागवन॥ ॥ धर्मसा
 ॥ मस. श्रीमहादेवयाग. स्वानकाययाइला॥ ॥ ॐ निश्रीपस्विनाम्नाय उम्
 नाय. सिद्धिलक्ष्मीददिनाम्नाय. नीलमनस्वगी. दुर्जाम्नाय. देवीनांपूष्पा
 नशुभशुभं समाफत॥ ॥ धर्मगंगागनयासंग्रह॥ ॥ यादृशीपूस्तकंद
 तादृशीलिवितंमया। यदिशुद्धमशुद्धंवालाधनीयंविचक्षतेः॥ सुस्वग
 ॥ मार्जशिनशुक्लदिन॥ रेजदध्वकूकू. वकनिस्मयाश्रीवाग्मनिनाऊनलि

॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ ॥